---

**धारावाहिक**

# दास्तान-ए-गुलरेज़

**म.क.रैना, मुम्बई**

---

*(स्रोतः 'गुलरेज़' - लेखक मुहम्मद यूसुफ टेंग और 'कश्मीरी ज़बान और शायिरी - खंड ३' संकलणकर्ता - अब्दुल अहद आज़ाद। प्रकाशक : जे एण्ड के अकैडॅमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेज्स, श्रीनगर)*

## गुलरेज़ और मक़बूल शाह क्रालवारी

## एक परिचय

मसनवी गुलरेज़ को कश्मीरी साहित्य में एक उत्तम स्थान हासिल है। मकबूल शाह क्रालवारी की यह मसनवी कश्मीरियों में जितनी लोकप्रिय हुई, उतनी और कोई मसनवी नहीं हो सकी। यद्यपि मकबूल शाह क्रालवारी से पहले महमूद गामी ने फारसी साहित्य की दूसरी प्रसिद्ध रचनायें जैसे यूसुफ ज़ुलेखा, लैला मजनून, शीरीं खसरौ आदि को कश्मीरी पैरावे में ढाल कर मसनवी को एक ऊंचा स्थान दिलाया, लेकिन मकबूल शाह की यह रचना उन सब से भिन्न और उन सब से ऊपर है। गुलरेज़ के बारे में मुहम्मद यूसुफ टेंग साहब लिखते हैं कि यह मसनवी वास्तव में कश्मीरी साहित्य की दुल्हन की मांग का टिका है। इस बात से भी किसी को इनकार नहीं कि मकबूल शाह की यह रचना मूल फारसी रचना से भी बहुत आगे निकल गई है। टेंग साहब के खयाल में जिन साहित्यकारों ने मकबूल के बाद भी फारसी रचनावों को कश्मीरी ज़बान में पेश किया, वह भी मकबूल की बराबरी नहीं कर सके।

गुलरेज़ की दास्तान मूलत: फारसी भाषा में ज़िया उद्दीन नख्शबी ने लिखी है। यह दास्तान इतिहास से सम्बन्धित कोई घटना नहीं है बल्कि एक काल्पनिक कथा है। मकबूल शाह क्रालवारी ने इस दास्तान को कश्मीरी काव्य का रूप कब दिया, निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। एक अनुमान के मुताबिक मकबूल शाह ने गुलरेज़ १८८७ में लिखी जब उन की आयु लगबग ५० साल की थी। कुछ लोगों का खयाल है कि उन की मृत्यु १८९७ में हुई जब वह तकरीबन ६० साल के रहे हूंगे। लेकिन हामदी कश्मीरी के खयाल में मकबूल शाह १८२० में पैदा हुऐ और १८५५ में ३५ साल की छोटी आयु में ही चल बसे। एक और प्रसिद्ध साहित्यकार अब्दुल अहद आज़ाद का कहना है कि मकबूल शाह की मृत्यु १८७५ में हुई।

मकबूल शाह का जन्म बडगाम तहसील में नागाम के निकट एक गांव क्राल वारी में हुआ। उन के पिता का नाम ख्वाजा अब्दुल क़दूस था। मकबूल को पीर मुरीदी का काम अपने पिता से विरासत में मिला लेकिन अपनी बीमारी की वजह से वह इस काम में पूरा ध्यान न दे सके। मकबूल शाह को मिली जागीर में दो तीन गांव भी थे लेकिन वहां के निवासी खुद बहुत गरीब थे। इसलिये उन की तरफ से भी मकबूल शाह को कोई राहत नहीं मिली। नतीजा यह हुआ कि कोई खास आमदनी न होने की वजह से उन्हें ज़बरदस्त गुरबत ने आ घेरा। अपनी बेचारगी को मकबूल शाह ने कुछ इस तरह ज़ाहिर किया है :

*पज़रान गुलन आर वलन हाय गरीबी, गाशस छे करान गट्, तापस छ़ाय गरीबी*

मकबूल शाह की दरिद्रता का यह आलम था कि छोटी मोटी मदद के लिये भी वह सरकारी अफसरों के पास कविता में लिखी हुई याचना लेकर जाते और उन्हें सुनाते। इस सिलसिले में उन की कविता के रूप में लिखी हुई एक याचना जो फारसी भाषा में लिखी गयी थी, बहुत मशहूर है। यह याचना उन्होंने एक सरकारी मुलाज़िम पंडित अमर नाथ को पेश की थी जिस में उन्हों ने अपनी फसल को महफूज़ करने के लिये सरकार से प्रार्थना की थी। गरीबी से तंग आकर मकबूल शाह ने आखिरकार थोडे में ही गुज़ारा करना सीखा और अपनी किस्मत को ईश्वर के हवाले कर दिया।

मकबूल शाह बचपन से ही बीमार रहते थे। बाद में उन्हें टी बी हुआ। वह दूध और फालूदा खाकर गुज़ारा करते थे। समय गुज़रते उन का जिगर भी कमज़ोर होने लगा। अपने अंतिम

दिनों में वह नमक भी नहीं खा सकते थे। अपने दुख का हाल उन्होंने कुछ इस तरह बयान किया है:

*इलुतौ छुस हॅरि ब्वन आवुरमुतन, ज़िलुतन मॅसीबतन तल ह्योतुमुतन*
*कांह ति म्वकलन पाय छुम नु च़े सिवा, या मुहम्मद मुस्तफा बख्शुम शफा*

गुरबत, लाचारी और बीमारी के अलावा भी कुदरत ने मकबूल शाह के लिये बहुत कुछ लिखा था। बहुत समय तक मकबूल के अपनी कोई औलाद नहीं हुई। मजबूर होकर उस ने अपने भतीजे मुस्तफा शाह को गोद लिया। मुस्तफा शाह भी उच्च स्तर की शायिरी करता था। उस की एक कविता से लिये गये यह पद उस की मधुर रचनाओं का अनुमान कराते हैं।

*मस चॉवुथस मयखानु, जानानु यिहम ना ।*
*व्यसरॉवुथस मस्तानु, जानानु यिहम ना।।*
*मे रोय होवुथ दूरि, दिल ह्यथ च़ोलुहम च़ूरो ।*
*फलवा गॅयस देवानु, जानानु यिहम ना।।*
*कस निशि लोगुय रस, किथु त्रॉवुथस बेकस ।*
*बेगानु छी हमखानु, जानानु यिहम ना।।*

मगर अभी मुस्तफा शाह पूरी तरह खिल भी नहीं पाया था कि कुदरत ने उसे १८-२० साल की आयु में ही इस दुनिया से उठा लिया। मुस्तफा शाह की मृत्यु से मकबूल की हालत और भी खराब हो गई। उन की बिगडती हालत का अंदाज़ा उन की मसनवी से ही ली गई इस पंक्ति से बखूबी होता है:

*शगूफस शीन गुलज़ारस कृहुन प्योम*
या
*हॉदुर लॉगिथ नॅदर पॉविथ च़ोलूहम, फिराका ललुवुन थॉविथ च़ोलूहम*
*खरीदारो कम्यू बाज़ार छ़ारथ, मे तावन पोवथम कमि वानु गारथ*

इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हुये भी मकबूल शाह किस तरह गुलरेज़ जैसी शाहकार मसनवी लिख सके, इस बात पर सब को हैरत हैं। शोहरत और लोकप्रियता के लिहाज़ से कश्मीरी साहित्य में मसनवी गुलरेज़ का वही स्थान है जो फारसी शायिरी मे जामी की यूसुफ ज़ुलेखा और निज़ामी की शीरीन खसरौ को हासिल है, या दीवानों में दीवाने हाफिज़ शीराज़ी को हासिल है। कश्मीरियों में गुलरेज़ कितनी लोकप्रिय हुई, इस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि १९४६ तक इस मसनवी के १८ संस्करण बिक चुके थे। तब से लेकर आज तक इस किताब के कितने ही और संस्करण छप कर बिक चुके हैं।

मुस्तफा शाह की असमय मौत से मकबूल शाह टूट चुका था। शायद कुदरत की तरफ से भी उन की यह हालत न देखी गई और आगे चल कर उस के अपने दो बच्चे हुऐ, एक लडकी और एक लडका। लडकी की शादी कलाशपोरा, श्रीनगर के एक पीरज़ादा खानदान में हुई थी। लडके का नाम पीर अली शाह था। कहते हैं मकबूल शाह की मृत्यु के समय पीर अली शाह की आयु केवल ६ महीने की थी। इस बात से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मकबूल शाह ६० साल की आयु में नहीं बल्कि ३५ साल की आयु में ही गुज़र गये हूंगे और गुलरेज़ भी उन्होंने छोटी आयु में ही लिखी होगी।

गुलरेज़ के अलावा मकबूल शाह ने जो रचनाऐं लिखी, उन में ग्रीस्य् नामु, बहार नामु, पीर नामु, मनसूर नामु व यूसुफ ज़ुलेखा प्रसिद्ध हैं। अब्दुल अहद आज़ाद ने उन की दूसरी कविताओं का संग्रह कुलियाते मकबूल के नाम से भी प्रकाशित किया है। कहा जाता है कि मकबूल शाह ने आब नामु, बे-बूझ नामु और नार नामु नाम से तीन और किताबें लिखी हैं, मगर उन का कोई अता पता नहीं है। गुलरेज़ केवल मकबूल शाह का सब से बडा कारनामा ही नहीं है बल्कि कश्मीरी साहित्य में भी इसे एक ऐसा स्थान हासिल है जिस की बराबरी शायद ही कोई और मसनवी कर सके।

मकबूल शाह क्रालुवारी की मसनवी गुलरेज़ पूरी की पूरी काव्य रूप में है जिस की भाषा मिश्रित कश्मीरी और फारसी है। गुलरेज़ी की इस कथा को मैं संक्षिप्त कश्मीरी गद्य रूप में ढाल कर आप के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ ताकि देवनागरी-कश्मीरी पढ़ने वाले लोग भी मकबूल शाह की इस रचना का आनन्द ले सकें। मसनवी के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण पद जो कश्मीरी भाषा में हैं और जो कहानी की निरंतरता को बरकरार रखने में सहायक हैं, उन को कहानी में शामिल किया गया है। इन पदों को शामिल करने का एक उद्देश्य यह भी है कि पढ़ने वाले को असली मसनवी की मधुर शैली का भी कुछ हद तक अंदाज़ा हो जाये।

इस मसनवी में एक कविता उस घटना को दर्शाती है जब कहानी की नायिका नोश लब नींद से जाग जाती है और नायक अजब मलिक को पास में न पाकर विलाप करती है। यह

प्रसिद्ध कविता *सुबुह फॉल, बुलबुलव तुल शौरो गौगाह, गॅयस बेदार मुज़र्यम चॅश्मे शहला* जिसे कश्मीरी काव्य में एक उच्च स्थान हासिल है और जो कश्मीरियों में बहुत ही लोकप्रिय है, इस संक्षिप्त रूपांतर में पूरी की पूरी शामिल की गई है। प्रसिद्ध लेखक श्री टी.एन.कौल इस कविता के बारे में लिखते हैं:

"(It is) a masterpiece of sorts and the most splendid example of his (Karalwari's) art, which has remained unsurpassed so far. The 60 odd couplets deftly absorb and express the passionately intense yearning, pain and anguish ever suffered by a woman in Kashmir's literary history, Habba Khatoon and Arnimal notwithstanding."

*(स्त्रोत: 'गुलरेज़' - लेखक मुहम्मद यूसुफ टेंग और 'कश्मीरी ज़बान और शायिरी - खंड ३'– संकलणकर्ता अब्दुल अहद आज़ाद। प्रकाशक - जे एण्ड के अकैडॅमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेज्स, श्रीनगर)*

❋ ❋ ❋

# दास्तान-ए-गुलरेज़

## मासूम शाह व सुन्दर पक्षी।

नखश्ब शहर का एक राजा था। नाम था तैफूर शाह। तैफूर शाह के पास काफी दौलत थी पर उसके कोई औलाद न थी। औलाद पाने के लिये वह दिन रात भगवान से प्रार्थना करता रहा। एक दिन उनके मन की मुराद पूरी हो गई और उनके हाँ एक लडका पैदा हुआ।

*दुआ तॅम्यसुंद सपुन अज़ हक इजाबथ, कॊरुन तस ताज़ु फरज़ंदाह इनायथ*
*थनु प्यव माजि निशि ज़न काज़ुकुय रौ, वुछिथ तैफूर शाह मसरूर क्याह गौ*

लडके का नाम मासूम शाह रखा गया। राजकुमार दिमाग से काफी तेज़ था। उसे ऊंची से ऊंची तरबियत दी गई। वह सब हुनर जो एक राजकुमार में होने चाहियें थे, उसे सिखाये गये। एक दिन वह अपनी महफिल सजाये बैठा था। संगीत, नाच गाना हो रहा था। मासूम शाह की नज़र छत पर पडी। एक सुन्दर रंगदार पक्षी दाना चुग रहा था। राजकुमार को यह पक्षी बहुत पसंद आया और वह उसे पाने के लिये बेक़रार हुआ। दरबारियों ने उस की बेक़रारी भाँप ली। उन्होंने पक्षी को पकडने की कोशिश की लेकिन वह उन के हाथ न लगा। दरबारियों ने पक्षी को लुभाने के लिये तरह तरह के दाने फेंके लेकिन वह उन को खाने के लिये सामने न आया। अब पक्षी उडने के लिये तैयार दिख रहा था। राजकुमार को लगा कि पक्षी उड कर वापिस नहीं आयेगा। वह बहुत ज़्यादा बेक़रार हुआ और अपनी छाती पीटने लगा। इस हरकत से उस के सिर पर रखा हुआ ताज नीचे गिर पडा। ज़मीन से लगते ही ताज में लगे मोती के कुछ दाने ज़मीन पर गिर गये। मोती देखते ही पक्षी उड कर नीचे आया और मोती के दाने चुगने लगा।

*वुछिथ दुरदानु बॊर जानावरन चाव, गुज़ा तस ओस ती, तथ प्यठ वॅसिथ आव*

दरबारियों ने राजकुमार से कहा, ‘‘अब चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम ने जान लिया है कि यह पक्षी मोती के दाने के सिवा और कुछ नहीं खाता है और अब इसे पकडना बहुत आसान है।

दरबारियों ने पक्षी को पकडने के लिये जाल फेंका और उस के अंदर मोती के कुछ दाने रख दिये। पक्षी ज्योंही मोती खाने के लिये जाल के अंदर आया, दरबारियों ने जाल खींच लिया। पक्षी अब कैद हो गया था। दरबारियों ने उसे जाल से निकाल कर एक पिंजरे में बंद कर दिया। राजकुमार सब काम छोड कर पिंजरे के सामने बैठ गया और पक्षी को एक टक देखने लगा। दिन बीतते गये। राजकुमार पिंजरे के पास से न हटा। वह महल और दुनिया छोड कर केवल पक्षी को देखता रहा। कुछ समय के बाद पक्षी ने दाना चुगना बंद कर दिया। दरबारियों ने रंग बिरंगे मोती के दाने उस के सामने रख दिये पर पक्षी पर कोई असर न हुआ। यह देख कर राजकुमार मासूम शाह बहुत दुखी हुआ और उस ने रोना शुरू कर दिया। कई दिन बीत गये लेकिन पक्षी ने दाना न खाया और न ही मासूम शाह ने रोना बंद किया। मासूम शाह की हालत देख कर पक्षी से रहा नहीं गया और उस ने एक लडकी की आवाज़ में राज कुमार से पूछा, ''आप को मुझ में क्या दिलचस्पी है और क्यों आप ने मेरे लिये अपना घर भार छोड दिया है?''

**पक्षी राजकुमार को अपनी कहानी सुनाता है।**

राजकुमार को दुखी देख कर पक्षी ने कहा, ''यदि मैं अपनी असली सूरत में होती तो मैं राजकुमार के दुख को बहुत हद तक दूर कर सकती थी। लेकिन मैं एक पक्षी की सूरत में हूँ। मैं राजकुमार की प्रशंसा करने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकती हूँ। मुझे क्षमा कर देना।'' पक्षी को इनसान की तरह बात करते हुये मासूम शाह हैरान हुआ। उस ने पक्षी को अपनी कहानी बताने को कहा। पक्षी तैयार न हुआ। उस ने अपनी कहानी बताने से साफ इनकार किया।

*वुनिस तामथ कॉरुम नु कांह खबरदार, चु छुख तवु निश द्वहन द्वन च़्वन हुंदुय यार*
*वनय य्वद सिर पनुन बूज़िथ ह्यकख नु, चु हरगिज़ ताबेह फहमीदन अनख नु*
*बु य्वदुवय बावु बा मुरदम पनुन हाल, गछ़न सँगीन दिल वॉलिंजि परकाल*

पर राज कुमार भी हठी निकला। उसने पक्षी को उसकी कहानी सुनाने के लिये मजबूर किया। पक्षी ने कहा, ''मैं परिस्तान के शहर बैय्यतुल-अमान के राजा की बेटी हूँ। मेरा नाम नोश लब है। मेरे पिता का नाम मशहूर शाह है और मेरी माँ का नाम गुलबदन बेगम है।'' इस तरह नोश लब ने अपनी कहानी शुरू की।

**नोश लब की कहानी।**

तुरकिस्तान में शाह बहगर्द नाम का एक बडा राजा था। उसका एक बेटा था जिस का नाम था अजब मलिक। अजब मलिक बहुत ही सुंदर और कदावर था। उसे देख बाग के फूल भी परेशान हो जाते थे। वह दूसरे सभी राजकुमारों से ज़्यादा चतुर था। उसे महफिलें सजाने का बहुत शौक था और अपने मित्रों व दाना लोगों के साथ बैठना बहुत पसंद था। एक दिन वह इसी तरह महफिल सजाये अपने साथियों के साथ बैठा हुआ था। अचानक उस के मन में खयाल आया कि दुनिया में उस से ज़्यादा सुंदर कोई और नहीं हो सकता। उस ने अपने साथियों से पूछा, ''क्या तुम लोगों ने किसी ऐसे आदमी को, चाहे नर हो या नारी हो, देखा है जो मुझ से ज़्यादा सुंदर है?''

*ब खॉतिर गव तॅमिस यिछ़ बज़मे बे गम, मे रॉस्तुय आसि कुस वॉथमुत ब आलम*
*वॅज़ीरन कुन दॉपुन छुव बूज़मुत ज़ांह, मे ह्यू छा ओसमुत कांह शाह ज़ादाह*

साथियों ने उस की बडी तारीफें की। उन्होंने कहा, ''आज तक कोई भी आप जैसा पैदा नहीं हुआ। आप की जैसी सुंदरता, आप का जैसा कद व आप की जैसी अक्ल किसी और के पास हो ही नहीं सकती।'' इस के बाद उनके मन में जो भी आया, राजकुमार की प्रशंसा में कह डाला। अजब मलिक अपनी प्रशंसा सुन कर बहुत खुश हुआ। महफिल में एक बुज़ुर्ग आदमी भी था। उसने दूसरे लोगों की राय से असहमति प्रकट की। उसने उन से कहा, ''तुम जो कुछ बोल रहे हो, सच नहीं है। यदि तुम लोग सचमुच किसी की सुंदरता के बारे में सुनना चाहते हो तो मुझ से सुनो।''

*सिफत हुस्नुक्य् मे निश तुह्य बूज़्तव व्वन्य, दपन कथ हुस्न, दम दिथ बूज़्तव व्वन्य*
*ब-आलम छुस नु वुन्यक्यन कांह ति सॉनी, बनेमुछ़ तस छे हुस्नुच मेहरबॉनी*

बुज़ुर्ग की बात सुन कर सब लोग हैरान हो गये। उन्होंने उस से पूरी बात बताने को कहा। बुज़ुर्ग ने कहा, ''मैं एक ऐसी औरत को जानता हूँ जो दुनिया में सब से ज़्यादा सुंदर है। मैं आप को उस के बारे में बताता हूँ।'' इस के बाद बुज़र्ग आदमी ने उस औरत की तारीफ में जो कुछ वह कह सकता था, कह दिया। औरत का हुस्न, उसका कद, उसके गाल, उसकी ज़ुल्फें, उसकी आँखें, उसके होंठ, उसके दांत, उसकी गर्दन, उसके हाथ, उसकी

कमर, गरज़ हर चीज़ की ज़ोर शोर से इतनी तारीफ की कि सुनने वाले दीवाने हो गये। बुज़ुर्ग ने यहाँ तक कह दिया कि उस सुंदरता की मूरत को देख कर जंगल से हिरन भाग जाते थे, उसकी गर्दन देख कर हंस शर्मिंदा हो जाते थे और उसके गाल देख कर खिले हुये रंग बिरंगे फूल मुर्झा जाते थे। बुज़ुर्ग ने बताया कि जिस औरत की मैं बात कर रहा हूँ उस का नाम नोश लब है और दुनिया भर में उस की सुन्दरता का मुकाबला करने वाला कोई नहीं है।

**राजकुमार अजब मलिक नोश लब का दीवाना हो जाता है।**

अजब मलिक ने किसी औरत की इतनी तारीफ पहले कभी न सुनी थी। वह मन ही मन नोश लब का दीवाना हो गया। वह अपना सुख चैन खो बैठा। बेकरारी उस के चेहरे से साफ दिख रही थी।

*व्लो माशोक़ मोरुस दूरिरन चॉन्य, कौरुस अज़ दिल-ब–आवाऱ ज़्यक़ लॉन्य*
*मे न्यूथम च़ूरि दिल रूज़िथ च़ॆ दूरे, ललुवुन छुम ज़लवुन नार मूरे*

उस ने बुज़ुर्ग आदमी से उस जगह का नाम पूछा जहाँ नोश लब रहती थी। उस ने यह भी पूछा कि नोश लब इनसान है या परी ?

बुज़ुर्ग मंत्री ने अजब मलिक की बक़रारी देख कर कहा, ''समंदर में एक बहुत बडा द्वीप है। उस द्वीप में बैयतुल अमान नाम का एक देश है और मशहूर शाह उस देश का राजा है। बैयतुल अमान ज़मीन पर स्वर्ग के बराबर है। वहाँ परियाँ रहती हैं। मशहूर शाह की एक बेटी है जिस का नाम नोश लब है। वह दुनिया की सब से सुन्दर औरत है।''

अजब मलिक नोश लब को देखने के लिए अब ज़्यादा ही बेताब हुआ। वह नोश लब के प्यार में अपना सुख चैन खो बैठा और विलाप करने लगा लेकिन महल के सभी लोगों से उस ने यह राज़ छिपा कर रखा कि उस के मन में क्या है। उसने अपने साथियों व बुज़ुर्ग आदमी से भी यह राज़ छिपाने की ताकीद की। राजा से अपने बेटे की हालत न देखी गई। उस की समझ में नहीं आ रहा था कि राजकुमार की यह हालत क्योंकर हो गई है। राजकुमार ने कुछ भी बताने से इनकार किया।

राजा ने अजब मलिक का मन बहलाने के लिए नाच व संगीत की महफिल सजाने का आदेश दिया। महफिल सजाई गई। सितार व संतूर बजने लगे पर राजकुमार का मन

नहीं लगा। उसे हर तरफ नोश लब दिखाई दे रही थी। वह अब ज़ोर ज़ोर से विलाप करने लगा। उस की आंखों से आंसू बह रहे थे। उस ने बुज़ुर्ग आदमी को अकेले में बुलाया और उस से विनती की कि वह उसे नोश लब के बारे में कुछ और बताए। राजकुमार की हालत देख कर बुज़ुर्ग को बहुत अफसोस हुआ। उस से राजकुमार की हालत न देखी गई। वह अपने आप को ही कोसने लगा कि क्यों उस ने नोश लब की बात राजकुमार को बताई। उसे इस बात का भी डर हुआ कि कहीं राजकुमार आत्महत्या न कर दे।

बुज़ुर्ग ने अजब मलिक का दिल बहलाने के लिए एक नई कहानी शुरू की लेकिन राजकुमार कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। वह अब केवल नोश लब को देखना चाहता था।

*व्लो अॅश्को अॅछन अंदर करय जाय, मॅ कोरथम क्याह गमुक ज़ोलानॖ दरपाय*
*चॖ ख्वदुवय आशुकन प्यठ तीर त्रावख, ब यक तीरे निगाह लछ खून हारख*

अजब मलिक दिन रात नोश लब के बारे में ही सोचता रहा और रोता रहा। उस की हालत दिन ब दिन खराब होती गई। उस के सब साथी उसे समझाने में व नोश लब के गम से आज़ाद करने में नाकाम हुए। अजब मलिक के मन में एक ही बात घर कर चुकी थी कि वह नोश लब को कब देखेगा। इस के आगे वह कुछ और सोच ही नहीं सकता था। वह न तो कुछ खा पी रहा था और न ही सो पा रहा था।

## राजा अजब मलिक की खबर पाकर उसे देखने आता है।

आखिरकार राजकुमार की सेहत बिगड गई। वह कुछ दिनों के अंदर ही सूख कर काँटा हो गया। उस की हालत देख कर मंत्रियों ने राजा को खबर की। राजा पागलों की तरह बेटे को देखने के लिए आया। राजकुमार बिस्तर से उठ नहीं सका। उस के कपडे फटे हुये थे और आँखों से आँसू जारी थे। उस ने न तो राजा को सलाम की और न ही उस से कोई बात की। बेटे की हालत देख कर राजा रो पडा। उस ने एक दाना व काबिल हकीम को महल में बुलाया।

हकीम बहुत अनुभवी था। उस ने राजकुमार की नबज़ देखी। उस को सर से पाँव तक गौर से देखा। हकीम को राजकुमार में कोई जिस्मानी तकलीफ दिखाई नहीं दी। उसे राजकुमार के दिल के दर्द का पता न था। वह राजकुमार का इलाज नहीं कर सका। राजकुमार ने देखा कि हकीम को उसकी बीमारी का पता नहीं चल रहा है। उसने हकीम से कहा:

*दॊपुस तॅम्य ऐ तबीबे तेज़ फितरत, यियी कर अॅश्कु दॉदिस रास हिकमत*
*मे अॅश्कुन दोद छुम क्या यथ छु चारु, ज़ि दरदे यार गॊमुत छुस अवारु*

हकीम को राजकुमार की असली बीमारी का इशारा मिला। उस ने राजा से कहा कि राजकुमार दिल का मरीज़ है। राजा ने हकीम से इस बीमारी का इलाज पूछा। हकीम ने कहा कि इस बीमारी का उस के पास कोई इलाज नहीं है। उस ने राजा को सलाह दी कि किसी ऐसे आदमी को राजकुमार के पास बिठाना चाहिये जो उस के दिल का राज़ पूरी तरह जान सके। जब यह पता लग जाये कि राजकुमार की बीमारी की असली वजह कौन है, तब हम उस का इलाज जान सकते हैं।

राजा ने एक दाना मंत्री को बुलाया और कहा, ''तुम राजकुमार के पास उस के हमदर्द बन कर रहो और यह पता लगाने की कोशिश करो कि उस की बीमारी की असली वजह कौन है।'' मंत्री आदाब बजा कर चला गया।

मंत्री राजकुमार के पास पहुँचा। उसे प्यार किया और उसके आँसू पूंछ डाले। राजकुमार को लगा कि मंत्री सचमुच उसका मित्र बन सकता है। वह उस से गुल मिल गया। मंत्री ने राजकुमार से कहा, ''आप मुझे केवल उस औरत का नाम बताइये जिस पर आप इस कद्र दीवाने हो गये हैं। मै वादा करता हूँ कि यदि वह आकाश में भी रहती होगी, उसे वहाँ से लाकर आप के हवाले कर दूँगा।''

*गॊमुत कस छुख चु आशक बावतम सिर, करन च्रेय ब्रोंठकुन दरहाल हॉज़िर*
*बु वालन आसि य्वद प्यठ आसमानस, दिमय छ्रॉरिथ अॅनिथ सॉरिस जहानस*

**अजब मलिक मंत्री को दिल की बात बताता है।**

मंत्री की बात सुन कर व उस का प्यार देख कर अजब मलिक नर्म पड गया। उस ने मंत्री को मन की बात बता दी। मंत्री हैरान हुआ। उस ने न तो कभी नोश लब का नाम सुना था और न ही उस के राजा पिता का। मंत्री को यकीन था कि बूड़े आदमी ने अजब मलिक को कोई झूठी कहानी सुनाई है। उस ने राज कुमार को समझाने को कोशिश की ।

*वुनिस ताम कॉंसि हंज़ि ज़ॆवि छुनु द्रामुत, न नामे नोश लब दर गोश च्रामुत*

*गुमान छुम बुड्य गलथ वॊनमुत छु बे शक, अजब मॅलिकस ति बूज़िथ खॅच़ स्यठाह च़ख*

मंत्री की बात सुन कर अजब मलिक को गुस्सा आया पर मंत्री ने उस के गुस्से को अनदेखा कर दिया। उस ने राजकुमार से कहा, ''किसी देश के राजा या उस के खानदान में किसी को भी यह शोभा नहीं देता कि वह औरतों के प्यार में दीवाना हो जाये। मेरी सलाह है कि आप भी इन बातों से दूर रहें, इसी में आप की भलाई है।'' राजकुमार किसी सूरत मानने वाला न था। मंत्री ने उसे समझाने के लिये औरतों की बे-वफाई पर एक कहानी सुनाई।

**(अगले अंक में जारी)**

———————————————————————————————

धारावाहिक

# दास्तान-ए-गुलरेज़ -३

म.क.रैना, मुम्बई

## हज़रत ईसा और युवक।

मंत्री ने अपनी कहानी यूँ शुरू की।

एक बार हज़रत ईसा मसीह कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक कब्रिस्तान देखा और वहां जाकर प्रार्थना की। कब्रिस्तान के अंदर एक युवक रो रहा था। युवक बहुत कमज़ोर था। रो रो कर उस का हाल बुरा हो गया था। ऐसा लगता था कि वह बहुत तकलीफ में है। हज़रत ईसा उस के पास गये और उस से रोने की वजह पूछी। युवक ने कहा कि मेरी एक प्यारी और सुंदर बीवी थी, वह गुज़र गई। मुझे उस के मरने का बहुत दुख है इसलिये रो रहा हूं।

*व्वं छुस प्रारान कज़ा कुनि किन्य् यियम ना, ब-जल्दी तस रॅफीकस निश नियम ना*
*तॅमिस रॉस्तुय यियम क्याह ज़ुव मे दरकार, तॅमिस रॉस्तुय लसुन म्योनुय छु दुशवार*

युवक की दशा देख कर हज़रत ईसा को दया आई। उस ने युवक से कहा कि मुझे वह कब्र दिखा दो जिस में तुम्हारी औरत दफन है। यह सुन कर युवक उतावला हो गया। यह जान कर कि हज़रत ईसा उस की औरत को फिर ज़िंदा कर देंगे, वह खुशी से दीवाना हो गया। अपने दिमाग पर काबू न रख कर उस ने एक कब्र की तरफ इशारा किया। हज़रत ईसा उस कब्र पर गये और उस में दफन शव को ज़िंदा कर दिया। कब्र तोडते हुये एक यहूदी बाहर निकला। यहूदी का रंग काला हो गया था और उस का शरीर आग में जल रहा था।

यह देख कर हज़रत ईसा ने यहूदी से पूछा, ''तुम इतनी तकलीफ में क्यों हो और तुम्हारी हालत ऐसी क्यों हुई है?''

यहूदी ने कहा, ''मेरी जान आप पर कुरबान। खुदा ने शायद आप को मेरे लिये ही यहाँ लाया होगा। मुझे ईमान का कलिमा पढा कर इस दाग ने नजात दिलाइये।'' हज़रत ईसा ने उस की मुराद पूरी कर दी और वह खुश होकर अपने घर की तरफ चल पडा।

हज़रत ईसा ने युवक से पूछा, ''तुम कह रहे थे कि इस कब्र में तुम्हारी औरत दफ़न है। कहाँ है वह? तुम झूठ बोल रहे थे या कब्र पहचानने में गलती हुई?'' युवक ने कहा, ''मेरा दिमाग कुछ समय के लिये काम नहीं कर रहा था इसलिये कब्र दिखाने में गलती हो गई।'' इस के बाद युवक ने हज़रत ईसा को अपनी पत्नी की असली कब्र दिखा दी। हज़रत ईसा उस कब्र के पास गये और प्रार्थना की। कब्र में से एक सुन्दर नारी बाहर निकल आई। युवक खुशी से झूम उठा और दोनों ने एक दूसरे को बहुत प्यार किया।

*जवानन तस दॊपुन माशोक़ म्याने, मे ऑसिम पार गॉमत्य दादि चाने*

युवक और उस की पत्नी ज्योंही घर की तरफ चलने लगे, उन्हें कुछ दूरी पर उस देश के राजा के सिपाही दिखाई दिये। सिपाहियों के साथ राजकुमार भी था जो शहर का चकर लगा कर वापस महल की तरफ जा रहा था। राजकुमार का नाम सारिस था। अचानक सारिस की नज़र उस औरत पर पडी। औरत की सुंदरता को देख कर वह उस का दीवाना हो गया। ज्योंही औरत की नज़र राजकुमार पर पडी, वह भी उस की दीवानी हो गई। सारिस ने युवक से कहा, ''तुम चोर हो। तुम ने महल खाने में चोरी की है। यह औरत मेरी कनीज़ है और तुम इसे महल से भगा कर ले गये हो।'' युवक ने राजकुमार के सामने हाथ जोडे। कहा कि मैं चोर नहीं हूं। यह औरत मेरी बीवी है और यह बहुत समय पहले मर गई थी। आज ही मेरे खुदा ने इसे मेरे लिये जिंदा कर दिया है।'' राजकुमार को युवक की बात सुन कर गुस्सा आया।

*दॊपुस शाहज़ादन ऐ दुज़दे तबाहकार, मूलय अज़ जानि ख्वद छुय नु यिवान आर*
*तुलुस थफ वथ पनुन्य् रठ नतु मारथ, अथु त्राव व्वन्य नतु बरदार खारथ*

सारिस की ललकार सुन कर युवक घबरा गया। उस ने औरत की तरफ देखा पर वह इस थोडे से समय में ही बदल चुकी थी। उस ने राजकुमार से कहा, ''मैं सच मुच राजा की

कनीज़ हूँ। मुझे महल खाने से यह चोर ही उठा लाया है।'' यह सुन कर युवक के पाँव तले ज़मीन खिसक गई। पत्नी की बात सुन कर वह अपनी छाती पीटने लगा पर औरत पर कोई असर न हुआ। वह राजकुमार सारिस के साथ निकल पडी। युवक रोने लगा और उस के पीछे पीछे चलने लगा।

*रिवॉनी तस कुनथ लॉग करनि विलुज़ार, पॅयस शायद दिलस रहमा, यियस आर*

युवक के ज़ार ज़ार रोने का औरत पर कोई असर न हुआ। वह राजकुमार के साथ चली गई और पीछे मुड कर भी न देखा। युवक रोता रहा।

युवक फिर हज़रत ईसा के पास पहुँचा और उन्हें औरत की कहानी सुनाई। हज़रत ईसा हैरान हुआ। वह युवक को साथ लेकर औरत के पास महल में पहुँचा। उस ने औरत से कहा, ''क्या तुम्हें मालूम है कि इस युवक ने तुम्हारे लिये कितनी मुसीबतें उठायी हैं। इस के पाँव पकड कर माफी मांग लो क्योंकि इसी ने तुम्हें फिर से ज़िंदगी दिलायी है।''

*खबर छयि कुच खॉरी तुज़ुन च़ॅय पथ, पतव लाकन च़ु द्रायख बद तॅबीयथ*
*परन प्यस बॅयि यि अॅमिसुय कुन टिकॉनी, अॅमी दॉवुय दुबारु ज़िंदुगॉनी*

लेकिन औरत ने हज़रत ईसा को भी वही झूठी कहानी सुनाई जो वह इस से पहले युवक को सुना चुकी थी। उस ने कहा मैं सच मुच इस देश के राजा की कनीज़ हूँ और यह चोर मुझे ज़बरदस्ती महल से उठा कर ले गया था। औरत की बात सुन कर हज़रत ईसा ने आस्मान की तरफ अपना हाथ उठाया और औरत को कोसा। औरत ज़मीन पर गिर गई और मिट्टी बन गई।

**मंत्री अजब मलिक को समझाता है।**

कहानी सुना कर मंत्री ने अजब मलिक से कहा, ''उस युवक ने क्या न किया अपनी पत्नी को फिर से जिंदा करने के लिये, पर उसे क्या मिला? औरत बे-वफा ही होती है, उस के पास प्यार नाम की कोई चीज़ होती ही नहीं।'' इस के बाद मंत्री उसे समझाता रहा कि जब उस ने नोश लब को देखा ही नहीं है और न ही उस की सुंदरता को परखा है, तो बिना देखे ही कैसा प्यार और कैसा अफसोस? पर अजब मलिक पर इन बातों का कोई असर न

हुआ। उस ने मंत्री से कहा, ''औरत बे-वफाई भी करे तो क्या, अपना प्यार सच्चा होना चाहिये। आशिक का काम ही वफ़ा करना है।''

*छ्वक् लद गोस दिल छुम होशि डॊलमुत, ब् छुस तस यार् संज़ी मायि वॊलमुत*
*दिमस फॅरियाद लायस नाद यारस, कत्यथ छुम वत् वुछान पत् लारस*

मंत्री की समझ में आया कि राजकुमार किसी की बात मानने वाला नहीं है। वह राजा के पास वापस आया और उसे अजब मलिक की पूरी कहानी सुनाई। राजा मंत्री की बात सुन कर परेशान हुआ। उस ने अपने सभी दाना और काबिल लोगों को महल में बुलाया और उन से पूछा कि क्या उन्होंने कभी नोश लब का नाम सुना है? उन्होंने कहा कि हम दुनिया के हर कोने में जा चुके हैं, रेगिस्तानों में रह चुके है, कोहिस्तानों, समन्दरों व जंगलों की खाक छान चुके हैं लेकिन इस नाम की औरत को न तो कभी देखा है और न ही उस का नाम सुना है। राजा यह सुन कर उदास हो गया और बेटे की हालत पर अफसोस करने लगा।

*कुनुय ओसुम कुनी वॉजिम वुनु मे, सु नय आस्यम दिलुक राहत छुनु मे*

**राजा अजब मलिक के पास जाता है।**

राजा बहगर्द राजकुमार से मिलने आया। उसे प्यार किया, पुचकारा और नसीहत की।

*अॅछन हुंदि गाशि हा ख्वश बाशि म्याने, यि क्याह ओसुय च्रे ल्युखमुत करम् लाने*
*च्रु वनतम आॅश राहत क्याज़ि त्रोवुथ, ह्यॊतुथ मातम तु खलवथ खान् प्रोवुथ*

राजा ने कहा, ''तुम्हें दुनिया का कोई भी ऐश व आराम चाहिये तो कहो। हम तुम्हें सब लाकर दे देंगे। तुम चांद को चाहो तो चांद लाकर देंगे। पर जिसे तुम चाहते हो, उस का तो कोई अता पता ही नहीं। वह कौन है, क्या है, कहाँ रहती है, कोई नहीं जानता। फिर भी यदि तुम कहो तो हम अपना सारा लाव लश्कर उसे खोजने में लगा देते हैं। हम पूरी दुनिया छान डालेंगे और उसका पता लगाने की कोशिश करेंगे। पर शर्त यह है कि तुम अपने आप को संभालो। तुम्हारी सूरत देख कर हमारे दिल पर छुरियाँ चलती हैं।''

राजा की बात सुन कर अजब मलिक ने कहा, ''मैं नोश लब को किसी सूरत में नहीं भूल सकता। जब तक मेरा उस से मिलाप नहीं होता, तब तक मैं इसी हालत में रहूँगा। मुझे इस हालत से कोई नहीं निकाल सकता।''

*छु लॉज़िम आशुकन लारुन अॅछव किन्य, ब-हर दम खूने दिल हारुन अॅछव किन्य*
*ख्वरव सुत्यन पकुन छुनु शर्ते यॉरी, ब–सर लारुन छु शर्ते दोस्तदॉरी*

राजा बेटे की बात सुन कर बहुत दुखी हुआ। उस ने कहा, ''तुम्हें मालूम है कि मेरा कोई दूसरा बेटा नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम मेरे बाद मेरा राज पाट सम्भालो और मेरा नाम ज़िन्दा रखो।''

*खबर च़ै छय दोयुम मा छुम मे गोबराह, कुनुय च़ ओसुहम वनतम च़ै गोय क्याह*
*तवक्काह ऐ पिसर ओसुम मे चोनुय, च़ थावख ज़िंद मेय पतु नाव म्योनुय*
*करख बर तख्ते शॉही कामरॉनी, रटख मालो खज़ानु जाय म्यॉनी*

अजब मलिक पर पिता की बातों का कोई असर न हुआ। राजा कहता रहा, ''तुम मेरे वारिस ही नहीं, मेरे प्यारे बेटे भी हो। क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मैं ज़िंदगी के अंतिम पड़ाव पर हूं। मैं बूढा हो चुका हूं। मेरे हाथ पाँव में ताकत नहीं। पता नहीं मौत किस घडी आकर मुझे ले जाये। मेरे बाद तुम को ही यह राज पाट सम्भालना है। क्या तुम्हें यह शोभा देता है कि तुम इस कठिन समय में मेरा साथ न देकर प्यार व औरत की बात करो। तुम्हारा जीवन तो केवल बादशाही करने के लिये है, दुखी होने व रोने के लिये नहीं।''

अजब मलिक अपने पिता की बात भी सुनने को तैयार न था। वह केवल नोश लब की बात सुनना चाहता था। नोश लब के सिवा सारी दुनिया उस के लिये बेकार थी। राजा की बातों से नाराज़ होकर अजब मलिक ने कहा, ''ऐ बादशाहे जवान बख्त! मुझे ताज व तख्त की क्या ज़रूरत है। मैं किसी के प्यार में दीवाना हूँ और उसी के लिये ज़िंदा हूँ। मेरे लिये बादशाहत कोई माइने नहीं रखती। मेरा रास्ता आप से बिलकुल अलग है।'' राजा अपने मन में बडी आशाऐं लेकर आया था लेकिन सब कुछ धरा का धरा रह गया। उसकी आँखों सें आँसू निकल पडे। रोते रोते उस ने राजकुमार से फिर विनती की कि वह उसे छोड कर न जाये।

*च़ थावुम कन करय बो रुच़ नॅसीहत, मतो च़लतम हॅतो अमि अॅश्क़ निशि पथ*
*थरे म्याने च़ ओसुख टूर अड़ फोल, वुछान ओसुस च़ै कर वारि फ्वली गुल*

*कवो कॊरुथो च़े म्यॉनिस श्रावुनस माग, बरय गोहम तु थॊवथम बर जिगर दाग*

राजा के ज़ार ज़ार रोने से अजब मलिक सोच में पड गया। पिता की हालत देख कर उसे रहा न गया। उस ने राजा से कहा, ''खुदा आप को सही सलामत रखे। क्या आप को ऐसा लग रहा है कि मैं ज़बरदस्ती यह दुख पाल रहा हूँ? क्या मैं खुद अपनी बरबादी के लिये सामान तैयार कर सकता हूँ? मुझे यह दर्द पालने की कोई इच्छा नहीं है। क्या कोई इनसान जान बुझ कर आग में जलना चाहेगा ? मैं खुद भी इस दर्द का इलाज ढूँढना चाहता था पर नहीं ढूँढ सकता। यह प्यार मेरे मन में ऐसा घर कर गया है कि मुझे किसी चीज का होश ही नहीं। मुझे खुद भी नहीं मालूम कि मैं क्या कर रहा हूँ और मुझे क्या करना चाहिये। यही वजह है कि मैं किसी की भी बात को नहीं समझ पा रहा हूँ।''

*बु ज़न मूदुस तु शाह ऑसिन सलामत, ब-नेकी ज़िंदु रूज़िन ता कयामत*
*कॊरुस लाचार ॲश्कन छुम नु तकसीर, मे लीखिथ दर अज़ल यी ओस तकदीर*
*मे ॲश्के नोश लब गव होश डॉलिथ, फिराकुक्य आतुशन थॊवुनस बु ज़ॉलिथ*

राजा रात गये तक अजब मलिक को समझाता रहा लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। लाचार होकर राजा वापस लौट गया।

**अजब मलिक रासख को राज़दार बनाता है।**

अजब मलिक ने बडी मुश्किल से रात गुज़ारी। सुबह होते ही उस ने अपने मित्र व मुँह बोले भाई रासख को बुलाया और उसे अपनी कहानी सुनायी। अजब मलिक ने कहा, ''मैं आज ही नोश लब को ढूँढने के लिये निकलना चाहता हूँ। मुझे मालूम है कि मेरे पिता इस बात की आज्ञा नहीं देंगे। तुम मेरे अच्छे मित्र हो। तुम यदि मेरा साथ दो तो हम इस सफर पर रवाना हो सकते हैं।''

*रॅफीकय छुख तु करतम गम गुसॉरी, छु यी दस्तूरो शर्ते दोस्त दॉरी*
*च़ पखतम सुत्य् करतम मॅहरबॉनी, करुम यॉरी छुहम यॊद यारे जॉनी*

अजब मलिक की बेकरारी देख कर रासख तैयार हुआ। अजब मलिक खुश हुआ। उसने कुछ और मित्रों को अपने साथ आने के लिये कहा। उनका जवाब पाते ही उसने रासख के साथ मिल कर सफर पर जाने का इन्तिज़ाम करना शुरू किया। राजा ने न चाहते हुये भी उनको जाने की इजाज़त दी।

**अजब मलिक सफर पर रवाना होता है।**

वह दिन आ गया जब अजब मलिक अपने यार दोस्तों के साथ नोश लब को ढूंढ़ने सफर पर निकल पडा। घोडों पर सामान व खज़ाना लाद दिया गया। सारी रात बिना रुके वह चलते रहे और सुबह होने पर वह एक बियाबान जगह पर पहुँचे। सब के पाँव ज़ख्मी थे और किसी में अभी और चलने की हिम्मत न थी। बियाबान में ही ढ़ेरा ढ़ाल दिया गया। अजब मलिक अब भी नोश लब की याद में डूबा हुआ था और रो रहा था।

*वनान ओस तालेहस कुन क्याह मे कोरुथम, फिराकुकि नार् सुत्यन सीन् बोरथम*
*च़े क्याह कोरुमय ब् कोरुथस खस्त् खॉतिर, ज़ि शॉही दौलतस कोरथस मुसॉफिर*

अजब मलिक और उस का कारवाँ चलता रहा। एक पडाव के बाद दूसरा, फिर तीसरा ... चोथा .... यहाँ तक कि सेंकडों पडाव हो गये। सालों बीत गये लेकिन नोश लब कहीं न मिली। वह हर शहर, हर गाँव, हर गली में उस का पता पूछते रहे लेकिन किसी को नोश लब के बारे में कुछ मालूम न था। अजब मलिक के साथी अब थक चुके थे। कोई भी आगे बढ़ने को तैयार न था। घोड़े भी माल ढोते ढोते निढाल हो चुके थे। अजब मलिक को लगा कि सफर जारी रखना बहुत मुश्किल है। उस ने रासख से कहा, ''एक खयाल मेरे मन में आया है। क्यों न हम लाव लश्कर व यार दोस्तों को यहीं छोड कर आगे निकल जायें। जब रात को सब गहरी नींद में होंगे तो हम दोनों चुपके से निकल जायेंगे।''

*वनय ब् मशवर् य्वद म्योन बोज़ख, मे सुती कालुचन हुशार रोज़ख*
*गछ़्व ज़य ज़ॅन्य् रॅफीकन च़ूरि नीरिथ, ह्यमव वथ यिम गछ़न दर खान् फीरिथ*

**(अगले अंक में जारी)**

———————————————————————————

धारावाहिक

# दास्तान-ए-गुलरेज़ -४

म.क.रैना, मुम्बई

## अजब मलिक व रासख समंदरी सफ़र पर निकलते हैं।

रासख ने अजब मलिक की बात नहीं मानी। वह यार दोस्तों को छोड़ कर चोरी छिपे निकलने को तैयार नहीं था। उस ने अजब मलिक से कहा, ''इस तरह जाना ठीक नहीं है। सफर कठिन है। कहीं किसी खतरे में पड़ गये तो क्या करेंगे ? यहाँ पास में ही एक नदी है। हम वहां ही जायेंगे। सफ़र का ज़रूरी सामान किश्ती में डालकर हम नदी से होकर समंदरी रास्ते से ही सफर करेंगे। समंदर के रास्ते समय भी कम लगेगा।''

अजब मलिक को रासख की बात ठीक लगी। ज़रूरी सामान और घोडे किश्ती में उतारे गये। अब नदी का सफर और फिर समंदरी सफर शुरू हुआ। जहाँ जहाँ बस्ती दिखाई देती थी, वहाँ वहाँ वह किश्ती किनारे पर बाँध कर बस्ती के अंदर जाते और नोश लब के बारे में पूछते। पहाड़ी और रेगिस्तानी सफर में वह एक साल बिता चुके थे। समंदरी सफर में एक और साल गुज़र गया। मगर नोश लब का कोई पता न चला।

## किश्ती समंदर में डूब जाती है ।

अजब मलिक कुछ सोच कर रासख से कहा, ''दो साल से हम मारे मारे फिर रहे हैं। आराम का एक पल भी नसीब न हुआ। मेरी सलाह है कि हम फिर खुश्की के रास्ते ही आगे बढें। एक तो कुछ समय के लिये किसी बस्ती में ठहर कर आराम भी कर लेंगे और दूसरे नोश लब के बारे में जगह जगह जानकारी भी लेंगे।'' रासख उस की सलाह पर गौर ही कर रहा था कि समंदर में ज़ोर का तूफान आ गया। देखते देखते किश्ती पानी में उलट गई और पथरों से टकरा कर चूर चूर हो गई। अजब मलिक के सब साथी समंदर में डूब गये।

साथ ही घोडे व सामान भी गया। अजब मलिक की किस्मत में अभी मरना नहीं लिखा था। उस ने किश्ती के एक टूटे हुये तख्ते को ज़ोर से पकड लिया और उस पर सवार हो गया। एक तरफ अपने साथियों के खोने का गम और दूसरी तरफ अपनी जान बचाने की चिन्ता, अजब मलिक की आंखों से आँसू निकल पड़े।

*वदान ओस मुबतला छुस द्वन गमन मंज़*
*लॉगुस कॉत क्याह बन्योम ओसुस कमन मंज़*
*न बूज़ुम यार सुंद पॉगाम नै नेब*
*पनुन्य यिम सुत्य ऑसिम गॉम तिम गॉब*

अजब मलिक का हाल बहुत बुरा था। जहाँ तक नज़र जाती थी, पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। दूर दूर तक न तो कोई टापू दिखाई दे रहा था और न ही कोई जीव जन्तु। वह लकड़ी के तख्ते को कब तक पकड़ कर रहा, इस बात का अनुमान उसे भी न था। आखिरकार पानी के अंदर गोते खाते हुये वह एक टापू पर पहुँचा। टापू पर कदम रखते ही अजब मलिक गिर पड़ा। उसे रासख की बड़ी याद आ रही थी जो उस के दूसरे साथियों के साथ ही समंदर में डूब गया था।

*सु रासख गोम कॉत युस यार ओसुम*
*सिरन महरम गमन गम ख्वार ओसुम*

## अजब मलिक एक मकान के अंदर घुस जाता है ।

अजब मलिक हिम्मत करके आगे बढ़ा। आगे कोई बस्ती न थी। वह दिन रात चलता रहा। एक जगह उस ने एक सुन्दर मकान देखा। राजकुमार मकान देख कर खुश हुआ पर उसके मन में भय बना रहा। मकान के पास पहुंच कर उस ने आवाज़ दी पर कोई बाहर ना आया। राजकुमार ने सोचा कि अंदर कोई न होगा। वह मकान के अंदर घुस गया। वहां उस ने एक शानदार तख्त देखा। तख्त के ऊपर कोई सो रहा था। अजब मलिक तख्त के पास गया और काँपते हाथों से सो रहे आदमी के ऊपर की चादर खींच ली। चादर के नीचे एक सुन्दर औरत सो रही थी। अजब मलिक की आँखें चुंधियाँ गई। उस ने आज तक किसी औरत में इतनी सुन्दरता नहीं देखी थी। यह औरत सचमुच स्वर्ग से आई हुई परी लगती थी। अजब मलिक के मन में खयाल आया 'कहीं यही तो नोश लब नहीं।'

औरत चादर के हटते ही जाग गई। एक खुबसूरत नवजवान को सामने देख कर वह हैरान हुई। उस ने राजकुमार से पूछा, ''तुम कौन हो और यहां तक कैसे पहुँच गये? यहां तो कोई जानवर भी नहीं आ सकता। लगता है तुम्हारी मौत ने तुम्हें यहां बुलाया है। अब तुम यहाँ से जिन्दा वापस नहीं जा सकते।''

अजब मलिक ने कहा:

छ़ुनुम वावाह मे तकदीरन ब-नागाह
गोमुत छुस मारु वनतम चारु छुम क्याह
मुसॉफिर छुस तु योत अलगॉबु वोतुस
मगर बर गश्तु बख्तुकि नेबु वोतुस
अर्ज़ छुम चानि खॅज़मच़ कर तु इनसाफ
कुनिय ज़ॅन्य क्याज़ि छख सिर बावतम साफ
दोयुम कांह छुय नु सुत्यन यार हमदम
गुज़ा क्याह छुय पनुन्य रुवदाद वनतम

अजब मलिक हैरान था। इस वीराने में न तो कोई आदमी है न जानवर। मैं इतना सफर तय करके आया पर मुझे कहीं कोई जीव जन्तु दिखाई न दिया। फिर यह औरत कहाँ से आई? उस ने औरत से पूछा, ''यहाँ कहीं खान पान का सामान तो दीखता नहीं। तुम खाये पिये बिना कैसे ज़िन्दा रहती हो?'' औरत ने जवाब दिया, ''तुम गलत सोचते हो। ऊपर वाला सब को खाना पहुँचा देता है। मुझे जिस ने यहाँ तक पहुँचाया और आज तक ज़िन्दा रखा, वही मेरे खाने का भी इन्तिज़ाम करता है।''

## मुसाफिर व पक्षी की कहानी ।

औरत ने  अजब मलिक को एक कहानी सुनाई। उसने कहा:
एक आदमी था। उसे दूर शहर जाना था। घर से वह तिल के कुछ दाने खाकर निकला था। चलते चलते उसे बहुत गर्मी लगी। कुछ देर आराम करने के लिये वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। उसके दांतों में तिल का एक दाना अटका हुआ था। उसे छींक आई और तिल का दाना ज़मीन पर गिर गया। एक पक्षी पेड़ के ऊपर बैठा था। उसने ज्योंही तिल का दाना

देखा, वह नीचे उतर गया और तिल का दाना खा लिया। जिस तरह खुदा ने उस पक्षी को खाने का सामान भेजा, उसी तरह वह हर एक को भेजता है।

औरत की बात सुन कर अजब मलिक की उत्सुकता और बढ़ी। उसने औरत से कहा, ''मुझे बताओ, तुम कौन हो ? इनसान हो कि परी हो ?''

**नाज़ मस्त की कहानी ।**

उस औरत का नाम नाज़ मस्त था। वह नोश लब की मुँह बोली बहन थी। नाज़ मस्त को एक जिन्न ने कैद करके रखा था। उस ने अजब मलिक को अपनी कहानी सुनाई। उसने कहा, ''मैं एक राजकुमारी हूं। मेरे पिता का नाम सिपाह सालार है और वह बहरीन देश का राजा है। मेरी दूसरी बहन का नाम मस्त नाज़ है। हमें हमारे पिता ने बहुत नाज़ों से पाला है। मैं अपनी सहेलियों में सब से बड़ी और उन की सरदार थी। एक दिन मैं उन के साथ खेल रही थी। मैंने बहुत ही कीमती कपड़े व ज़ेवर पहने थे। तभी आकाश से एक जिन्न नमूदार हुआ। उस ने मुझे ज़मीन से उठा लिया और इस द्वीप में लाकर यहाँ मकान में कैद किया। मेरे बारे में मेरी सहेलियों या मेरे घर वालों को भी कुछ मालूम नहीं है। एक साल से मैं यहां ही कैद हूं। मुझे यहाँ से निकलने और आज़ाद होने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा।''

*ज़बरदॅस्ती निशि रॅछिनस ख्वदायन*
*मिनथ थॅवनम जदन प्यठ तॅम्य् ख्वदायन*
*अमारथ छय यि तस अफरीत् सुंज़ जाय*
*छु सरकश कॉंसि हुंद कॅह छुस नु परवाय*

नाज़ मस्त की बात सुन कर राजकुमार घबरा गया। उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया। वह वहाँ से भागने लगा कि नाज़ मस्त ने उसे आवाज़ दे कर वापस बुलाया। नाज़ मस्त ने कहा, ''मैं ने एक साल के बाद किसी इनसान की शक्ल देखी है। क्या तुम थोड़ी देर मेरे साथ नहीं रह सकते ? तुम्हें कुछ आराम मिलेगा और मुझे भी तुम से बात करने का मौका मिलेगा।'' पर अजब मलिक बहुत घबराया हुआ था। उसने कहा, ''मैं यहाँ ज़्यादा देर नहीं ठहर सकता। मेरा मन दुखी है। मुझे खौफ़ है कि जिन्न आकर मुझे मार न डाले।'' नाज़ मस्त ने कहा, ''वह अभी अभी गया है और तुरन्त वापस आने वाला नहीं है। अभी उस के आने में बहुत समय है। इसलिये थोड़ी देर ग़म को भुला कर मेरे पास बैठ जाओ।''

ग्वडुन्य वन च़ुय पनुन्य सॉरुय हॅकीकथ
कम्यू म्वखु पेश ऑयी यीच़ मेहनथ
कम्यू बॉयिसु वोतुख यथ मकामस
बॅरिथ किथु च़ाख पानय कॉद खानस

अजब मलिक ने कहा, ''मैं तुर्किस्तान शहर का रहने वाला हूं। मैं वहाँ का राजकुमार था लेकिन मैंने अपनी प्रियतमा को ढूंडने के लिये ताज व तख्त छोड़ दिया। दो साल हो गये मुझे उसे ढूंडते हुये, पर उस का कोई पता न लगा।'' इस के बाद अजब मलिक ने नाज़ मस्त को अपन पूरी कहानी सुनाई और यह भी कहा कि किस तरह उस की किश्ती डूब गई और किस तरह वह उस मकान तक पहुंच गया।

*द्वहस रातस यिमन माहन तु वॅरियन*
*कोरुम गरदिश बियाबानन तु शहरन*
*न थॉवुम कांह ति जाया कांह मकानु*
*तसुंद कुनि शायि ज्यूठुम नु निशानु*

नाज़ मस्त नोश लब का नाम सुन कर खुश हुई। उस ने राजकुमार से कहा, ''तुम ने जो मुसीबतें अब तक उठाईं हैं, उन को भूल जाओ। तुम ठीक जगह पर पहुँच गये हो। तुम्हारे अच्छे दिन आ गये हैं। मैं नोश लब को जानती हूं। वह मेरी मुँह बोली बहन है। हम ने एक साथ माँ का दूध पिया है और हम एक साथ ही पले बढ़े हैं।''

अजब मलिक नाज़ मस्त की बात सुन कर फूले न समाया। उस ने नाज़ मस्त से कहा, ''खुदा के लिये मुझे पूरी बात बताओ। तुम दोनों का मेल कैसे हुआ।''

*शिनासॉयी गॅयी कति वारु वनतम*
*गछ़यम दिल शाद अज़ खॉतिर च़ल्यम गम*

नाज़ मस्त ने अजब मलिक को नोश लब से मिलने की कहानी सुनाई।

## नोश लब जन्म लेती है।

नाज़ मस्त ने कहा, ''एक दिन मेरी माँ मेरी बहन मस्त नाज़ को गोद में लेकर प्यार कर रही थी। अचानक उस के सामने एक सुन्दर परी जैसी औरत पैदा हो गई। औरत ने कीमती व खूबसुरत गहने पहने हुये थे। उस ने मेरी माँ को अदब से सलाम की। मेरी माँ ने भी उसे सलाम की। वह औरत मेरी माँ के सामने बैठ गई और उस की गोद से मस्त नाज़ को उठाकर उसे बेहद प्यार करने लगी। इस के बाद उस ने मेरी बहन को अपना दूध पिलाना शुरू किया। मेरी माँ ने उससे पूछा 'तुम कौन हो, तुम्हारा नाम क्या है और यहाँ क्यों आई हो ?' उस औरत ने कहा, 'मैं परियों पर और जिन्नों पर राज करती हूं। मेरा नाम गुलबदन बेग़म है। एक द्वीप में एक शहर है जिस का नाम बैयत-उल-अमान है। वहाँ का राजा मशहूर शाह है जो जन्म से ही परियों पर राज करता है। मैं उसी की बीवी हूं। जिस दिन तुम ने इस बच्ची को जन्म दिया, उस दिन मैं यहाँ पास से ही गुज़र रही थी। मेरा भी बच्चा जनने का समय आया था। जगह न मिलने की वजह से में लाचार हुई। मैं ने अपने ऊपर परदा डाल दिया और मंत्र पढ़ कर तुम्हारे घर के अंदर आ गई। मेंने भी एक लड़की को जन्म दिया। मैं उसे लेकर अपने घर गई और उस का नाम नोश लब रख। उसे देख कर फूले नहीं समाती। उसी दिन मैने तुम्हारी लड़की को भी देखा था और मुझे उसे देखते ही प्यार हो गया था। आज उसे ही देखने यहाँ आई हूँ।'

*यनॖ स्वय नोश लब ज़ायम ज़्ञे नखॖ तल*
*तनॖ प्रेथ सातॖ ऑसॖम यूर्य कुन कल*
*हदॖ नीरिथ मे ॲम्य सुंद छुम महब्बथ*
*वुनिस तामथ मूलय आयम नॖ फुरसथ*

यह सुन कर मेरी माँ ने उसे कहा, 'मैं भी तुम्हारी लडकी को देखना चाहती हूं।' गुलबदन बेग़म ने साथ आई परियों को आदेश दिया कि घर जाकर तुरन्त नोश लब को लेकर आऐं। परियाँ गईं और एक क्षन में नोश लब को लेकर वापस आ गईं। नोश लब को देख कर मेरी माँ बहुत खुश हुई। उस ने नोश लब को गोद में लिया और उसे अपना दूध पिलाया। थोड़ी देर के बाद गुलबदन बेग़म वापस जाने लगी।

*तॅमिस कुन माजि म्याने वॊन ब इखलास*
*ज़्ञे तॖ असि वारॖ गव व्वन्य उलफताह खास*

*हके सोहबत मशी नु युथ च़्रे व्वन्य ज़ांह*
*करुन्य गछि मेहरबॉनी गाह व बे गाह*

गुलबदन बेग़म ने मेरी माँ से वादा किया कि वह हर महीने आया करेगी। उस दिन के बाद वह सचमुच हर महीने आती रही और हमारे यहाँ रात को ठहरती भी रही। जिस रात वह हमारे यहाँ होती है, उस दिन हमारे घर में बड़ी रौनक रहती है। मेरी माँ ओर गुलबदन बेग़म भी एक दूसरे से बहुत प्यार करते है।''

**जिन्न वापस आता है और अजब मलिक के हाथों मारा जाता है ।**

नोश लब की कहानी सुना कर नाज़ मस्त ने अजब मलिक को वहाँ से निकल जाने को कहा। नाज़ मस्त ने कहा, ''जिन्न के आने का समय हो गया है। तुम तुरन्त यहाँ से निकल जाओ। यदि उस ने तुम्हें देख लिया तो तुम को खा जायेगा।

*ब जल्दी तुल कदम व्वथ तोर कुन पख*
*समख तति माजि म्याने याम वातख*
*मे वोनुमय नेब व्वथ गछ दोर ह्यथ लार*
*यकीन बे-शक मे छुम डेशख च़्र दिलदार*

अजब मलिक अकेले जाने को तैयार न हुआ। वह नाज़ मस्त को भी साथ ले जाना चाहता था। नाज़ मस्त जाने को तैयार नहीं हुई। उस ने कहा:

*चे सुत्यन म्योन येति नेरुन छु मुश्किल*
*पतु करि लार असि देवे सियाह दिल*
*गछ्व य्वद क्रूह सासस दूर नीरिथ*
*तती प्यठु बाज़ गश्त अनि यूर्य फीरिथ*

नाज़ मस्त ने बहुत चाहा कि अजब मलिक अपनी जान बचाने के लिये वहाँ से चला जाये पर वह तैयार न हुआ। उस ने नाज़ मस्त से वादा किया कि वह जिन्न को मार कर और उसे आज़ादी दिलाकर ही जायेगा। वरना अपनी जान भी वहीं देगा।

जिन्न को मारना इतना आसान नहीं था जितना अजब मलिक समझता था। लेकिन वह किसी सूरत मानने को तैयार न था। वह समझता था कि किस्मत साथ दे तो कुछ भी मुश्किल नहीं है। नाज़ मस्त मजबूर थी। वह अजब मलिक के लिये प्रार्थना करने लगी। कुछ ही देर बाद जिन्न वापस आया। उस के कदम रखते ही पूरा घर हिल गया जैसे कोई ज़बरदस्त भूचाल आया हो। अंदर आते ही उस ने अजब मलिक को देख लिया।

*व्वपर शख्साह वुछुन अंदर इमारत*
*क्रखाह बॅड लॉयिनस कुस छुख ब मारथ*

**(अगले अंक में जारी)**

———————————————————————————

धारावाहिक

# दास्तान-ए-गुलरेज़ -५

म.क.रैना, मुम्बई

## अजब मलिक जिन्न को मारता है ।

अजब मलिक की नज़र ज्योंही जिन्न पर पडी, उस की जान निकल गई। उस ने मन ही मन खुदा को याद किया और यह सोच कर कि अब जीवित रहना मुमकिन नहीं है, अपने लिये फातेह पडा। मरना तो है ही, क्यों न जिन्न के साथ टक्कर ली जाये, यह सोच कर वह आगे बढ़ा और जिन्न से लडने को तैयार हो गया। उस ने एक कमान हाथ में ली और पूरी ताकत लगा कर जिन्न के ऊपर एक तीर चलाया। न जाने क्या हुआ कि जिन्न तीर लगते ही ज़मीन पर गिर पडा। ज़मीन हिल गई। जिन्न के बदन से खून निकलने लगा। अजब मलिक ने शमशेर हाथ में ली और एक ही झटके में जिन्न का सर धड़ से अलग कर दिया। फिर उस ने उस के शरीर के टुकडे टुकडे कर दिये। जिन्न के मरते ही नाज़ मस्त खुशी से चिल्ला उठी।

*गलान ऑसुस बु यथ ज़िंदानुसय मंज़*
*दज़ान युथ ज़न हतब छे दानुसय मंज़*
*खॅचुम अज़ चॉन्य बॅड मिनथ तु लादन*
*लगय क्वरबान वंदय सर च़े पादन*

## अजब मलिक व नाज़ मस्त बहरैन की तरफ निकलते हैं।

नाज़ मस्त ने अजब मलिक के साथ वादा किया कि वह उसे नोश लब के पास पहुँचा देगी। दोनों बहरैन देश की तरफ निकल पडे। सफर बहुत लम्बा था। वह दिन रात चलते रहे और

एक दिन बहरैन की सरहद तक पहुँच गये। दोनों थक कर चूर हो गये थे। आगे जाने की किसी में हिम्मत न थी। नाज़ मस्त ने एक क़ासिद को बुलाया और उसे अपना एक पत्र बहरैन के राजा तक पहुँचाने के लिये कहा। क़ासिद तैयार हुआ। नाज़ मस्त ने इस काम के लिये उसे एक बडा इनाम दिया।

नाज़ मस्त ने पत्र में अपने बारे में और फिर अजब मलिक का उससे मिलने के बारे में सब कुछ लिख दिया। अजब मलिक के हाथों जिन्न के मरने और अपने आज़ाद होने की बात भी लिख दी।

*ब़ ऑसुस कॉद दर ज़िंदाने हिजरान*
*गॅयस आज़ाद मुश्किल गोम आसान*
*ब-कहरे हक सपुन अफरीत बरबाद*
*ब़ कॅरनस रहमत़ सुत्यन शादो आज़ाद*

नाज़ मस्त घर लौटने को बेताब थी। उसे अपने पिता की बहुत याद आ रही थी। उसके लिये एक एक पल गुज़ारना मुश्किल हो रहा था। उस ने लिखा:

*मे वाराह आमतुय छुम लोल चोनुय*
*सॅनिथ गोमुत दिलस छुम लोल चोनुय*
*ब-खॅदमथ वात़ कर च़लिहेम दिलुक शर*
*निसारे पाये शाह कऱ हा पनुन सर*
*वलेकिन वात़ कर छुम दूर मॅंज़िल*
*तवय छुम इज़तराबे गोमतुय दिल*
*खुशी छम खाब गॉमुच़ ताब छुम ऩ*
*ऑछव किन्य खून जॉरी आब छुम ऩ*
*सरापा हाल पनुनुय कोर मे इज़हार*
*सलामत आस ऐ शाहे जहान दार*

क़ासिद पत्र लेकर चल दिया और बहुत सफ़र तय करके बहरैन के राजा के पास पहुँच गया।

**राजा पत्र पढ़कर जवाब भेजता है।**

पिता को जब बेटी का पत्र मिला तो वह फूले न समाया। उस को यक़ीन ही न हुआ कि उसकी बेटी जिंदा है। उसने पत्र को अपनी आँखों के साथ लगा लिया और फिर पढ़ना शुरू किया। पत्र पढ़ कर क़ासिद को शाबाशी दी और पत्र का जवाब नाज़ मस्त तक पहुँचाने को कहा। राजा ने लिखा :

*फिराक़ चानि ओसुम सूर गोमुत*
*ज़मीन तंग आसमान यॅच्र दूर गोमुत*
*वनय क्याह चानि खॉतुर गोम कुस दाह*
*कराराह वार पॉठ्यन आम नय ज़ांह*
*वॅरम मे यावरी बख्तन च़ोलुम गम*
*वलय, कल सातु सातु तूर्य कुन छम*

राजा ने क़ासिद को अपना पत्र सोंपा। साथ ही मोतियों से सजायी हुई एक डोली भी दी और कुछ गुलाम और कनीज़ें भी साथ में भेज दिये। क़ासिद सब सामान लेकर रवाना हुआ और कुछ दिन बाद नाज़ मस्त के पास पहुँचा। कासिद ने उसको उसके पिता का हाल सुनाया और पत्र सोंप दिया। पत्र पढ़ कर नाज़ मस्त बहुत खुश हुई और अजब मलिक को साथ लेकर बहरैन के लिये रवाना हो गई।

राजा ने जब अपनी बेटी को देखा, वह अपने सब ग़म भूल गया। अपने घर लौट आने पर नाज़ मस्त भी खुशी से फुले न समा रही थी। सारे शहर में खुशियाँ मनाई गईं। ग़रीबों व लाचारों में पैसा बांटा गया। नाज़ मस्त ने अजब मलिक की पूरी कहानी अपने पिता को सुनायी और साथ ही उस की बहादुरी की तारीफ़ भी करने लगी। राजा बहुत खुश हुआ। उसे यक़ीन ही न हो रहा था कि अजब मलिक जैसा कम आयु का इनसान एक विशाल जिन्न को मार सकता है।

नाज़ मस्त ने राजा को बताया कि असल में अजब मलिक घर से नोश लब को ढूँढ़ने के लिये निकला है। राजा ने कहा :

*दोपुस तॅम्य तस कुरन्य लॉज़िम छे यॉरी*
*छे तुजमज़ चानि पुछि तॅम्य यीज़ खॉरी*
*यियी यॅलि नोश लब रौदाद वॅनिज़्यस*
*त्युथुय वॅनिज़्यस ॲमिस प्यठ आर ॲनिज़्यस*

**अजब मलिक को रासख मिल जाता है ।**

राज कुमार अजब मलिक से मिल कर राजा बहुत खुश हुआ। उस ने अजब मलिक को बे-शुमार दौलत दी और महल में अपने साथ ही उसके बैठने की जगह भी बना ली। राजा को अजब मलिक बहुत प्यारा लगने लगा। एस दिन राजकुमार शहर की तरफ सैर को निकला। रात को जब वह वापस लौट रहा था उस की नज़र एक आदमी पर पडी। वह आदमी परेशान-हाल था। राजकुमार उस के क़रीब आया और ग़ौर से उस का चेहरा देखा। वह रासख था, राजकुमार अजब मलिक का प्रिय मित्र। रासख अजब मलिक को न पहचान पाया क्योंकि उस की चाल ढाल बदल चुकी थी। अजब मलिक ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वह रासख को महल में लेकर आयें। महल में पहुँच कर अजब मलिक ने रासख से पूछा, ''तुम कौन हो और कहाँ से आये हो?'' रासख ने अपनी कहानी सुनाई। अंत में उस ने कहा, ''किश्ती ढूबने पर मैं एक लकडी के तख्ते पर बैठा और उस को चलाते चलाते यहाँ तक पहुँच गया। मुझे मेरे मित्र अजब मलिक के बारे में कुछ भी पता नहीं कि वह ज़िन्दा भी है या नहीं। मैं उस को याद करके बहुत दुखी हो रहा हूं।''

*छ्वखा दिथ कोत च़ोलुम स्वख रावरॉविथ*
*नख त्रॉविथ द्वखाह बोड गोम थॉविथ*
*लबन कति सर करस क्वरबान पायन*
*हट्चुक रथ वंदहॅस लगहस बलायन*

रासख की आंखों से आँसू निकल पडे। अजब मलिक से यह सहा नहीं गया। उस ने कहा:

*वफ़ादारो मु वद बु यार छुस चोन*
*छुसय सुय आदनुक आरामे जान प्रोन*

अजब मलिक की बात सुन कर रासख खुशी से चिल्ला उठा। उस ने राजकुमार को गले लगाया। अजब मलिक ने उसे अपनी कहानी सुनाई। रासख यह सुन कर खुश हुआ कि अजब मलिक ने नोश लब का पता पा लिया है।

## अजब मलिक नाज़ मस्त से विनती करता है ।

अजब मलिक नोश लब को देखने के लिये बेक़रार था। वह नाज़ मस्त से विनती करने लगा कि वह उसे नोश लब से मिलादे। नाज़ मस्त ने कहा कि दूसरे दिन नोश लब अपनी माँ के साथ वहाँ आने वाली है। नाज़ मस्त ने एक फूलों के बगीचे में उन दोनों के मिलने का इन्तिज़ाम किया। उसने राजकुमार से कहा:

*च़ु कड तामथ क्वठ्यन दर बाग वाशा*
*ब़ु अनुनय नोश लब बहरे तमाशा*
*अगॉफिल पॉठ्य च़ै निशि वातुनावन*
*ब-जुज़ दॅरियाफ्त च़ै नज़दीक थावन*

## नोश लब नाज़ मस्त के पास आती है।

नोश लब अपनी माँ गुलबदन बेग़म के साथ राजा सिपाह सालार के महल में आ गई। उसे यह मालूम न था कि नाज़ मस्त जिन्न की क़ैद से आज़ाद होकर लौट आई है। उस ने जब महल में नाज़ मस्त को देखा तो वह बहुत खुश हुई। नाज़ मस्त के दूर होने की वजह से जो आग उस के तन बदन में लगी हुई थी, वह अब बुझ गई।

*मै ओसुम लोल आमुत वारयाह चोन*
*च़ु डीशिथ काच़ु ज़ूने ज़न च़ोलुम ग्रोन*
*यिनु चानिच खबर ऑसुम नु अज़ ताम*
*नतु च़ै रॉस कवु यियिहे मै आराम*

नाज़ मस्त ने नोश लब को अपनी और अजब मलिक की कहानी सुनाई। किस तरह जिन्न ने उसे क़ैद करके रखा और किस तरह अजब मलिक ने अपनी बहादुरी दिखाते हुये जिन्न को मार कर उसे बचा लिया, यह सब उसने नोश लब को विस्तार से बताया।

*ख्वदा गम कॉसिनस ऑसिन फ्वलुवुन*
*सु छ्वख बॅलुरॉविनस युस छुस ललुवुन*

नोश लब राजकुमार की तारीफ सुन कर उस की प्रशंसक हो गई। यह देख कर नाज़ मस्त ने उसे अजब मलिक की कहानी और उसके वहाँ आने का मक़सद बताया।

*कॅडिथ ऑसुस निमुच़ कल चॉन्य ॲश्कन*
*तमी कजि गॅजमुच़ुय तस ऑस हन हन*

पर नोश लब को अजब मलिक के मक़सद के बारे में नाज़ मस्त की कही हुई बात पसंद न आई। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि नाज़ मस्त उस के साथ इस तरह की बात कर सकती है।

*च़खि हॅच़ योर दोपुनस छा यि शायान*
*च़े तु मे व्यसु तोन व्वन्य वोत पायान*
*न ज़ानन कांह न ज़ान्यम कांह मे अज़ ताम*
*च़ु कवु यॅच़ छख करान नाहक मे बदनाम*
*कथव चान्यव कॅरुस गमगीन व दिलु तंग*
*फुटुरथम शीशु लोयुथ ऑयीनस संग*
*रवा छा यी अपुज़ तोहमथ मे ॲनिथम*
*ज़हरु बॅड श्राख ज़न वॉलिंजि छुनिथम*

**सच्ची बात सुन कर नोश लब नरम पड जाती है।**

नाज़ मस्त ने यह सोचा भी न था कि नोश लब अजब मलिक के दिल की बात सुन कर नाराज़ हो जायेगी। इसीलिये अब उस ने नोश लब को वह कहानी सुनानी शुरू कर दी जो बुज़ुर्ग आदमी ने अजब मलिक को सुनाई थी और जिसकी वजह से राजकुमार घर छोड कर निकला था।

*बुडस निशि बूज़िमुत्य ऑसिन सिफत चॉन्य*

*तवय गारान द्रामुत ओस वथ चॉन्य*
*कोहिस्तानन तु वॉरान खारनुय मंज़*
*बियाबानन तु जंगल ज़ारनुय मंज़*

कहानी सुन कर नोश लब नरम पड गई। उस का मन अब राजकुमार को देखने के लिये उतावला हो गया। उस ने नाज़ मस्त से विनती की कि वह उसे राजकुमार से मिलादे।

*गनेयम राय तॅम्य सुंज़ गोम तॉसीर*
*गॅयस बूज़िथ तसुंद अहवाल दिलगीर*

**नोश लब व अजब मलिक की मुलाक़ात होजाती है ।**

नाज़ मस्त नोश लब को उस बग़ीचे में ले गई जहाँ उस ने अजब मलिक को पहले से बिठा कर रखा था। बग़ीचे को देखते ही नोश लब का मन मचल उठा। हर तरफ रंग बिरंगे फूल थे। हवा के चलने से फूलों की महक हर तरफ फैल रही थी। बग़ीचे में गुलाब, ही, मसवल बुनफ्श, कारिपॅत्य, अश्क पेचान, यॅबुरज़ल, सदबर्ग, झाफर, नवरंग, अछि पोश मतलब हर प्रकार के फूल थे। रंग बिरंगे पक्षी पेडों की डालियों पर बैठ कर मीठी मीठी बोलियाँ बोल रहे थे। नाना प्रकार के फल पेडों से लटक रहे थे। हर तरफ मन को छू लेने वाला समाँ था। ऐसा लग रहा था जैसे इनसान स्वर्ग में आ गया हो।

नोश लब फूलों के बग़ीचे में दाखिल हो गई। अजब मलिक दूर बैठा हुआ था। उसके सामने साज़ व संगीत की महफिल सजी हुई थी। दुनिया से बेखबर वह एकटक आकाश की ओर देख रहा था। नोश लब ने दूर से ही अजब मलिक को देखा। युवक को देखते ही वह उसकी दीवानी हो गई। अजब मलिक जैसा सुन्दर युवक उस ने इस से पहले कभी न देखा था।

*ॲमिस रॊस्तुय छु मुश्किल व्वन्य लसुन म्योन*
*न्यबर अज़ बाग नेरुन ज़ुव खसुन म्योन*
*वॅथिथ तमि जायि थोॅद हरगिज़ हेॅचिस नु*
*ज़ि नंगो शर्मि ख्वद तस कुन पॅचिस नु*

नाज़ मस्त अजब मलिक के पास गई और उसे नोश लब के आने की खबर दी। राजकुमार ने ज्योंही नोश लब के आने की खबर सुनी, उस के होश उड गये। उस ने तुरन्त संगीतकारों को हुक्म दिया कि वह संगीत की महफिल जमा लें।

*कत्यू छ़ांडथ मत्यो दरशुन दिहम ना*
*मत्योमुत दादि चाने छुस यिहम ना*
*कत्यू छ़ांडथ वलो दिलदार म्याने*
*गॊलुस चाने गमय गमखार म्याने*

साज़ व संगीत के बीच में नाज़ मस्त ने नोश लब की मुलाक़ात अजब मलिक से करा दी। नोश लब की सुन्दरता देख अजब मलिक अपने होश खो बैठा। नोश लब सचमुच परी-शकल थी। राजकुमार को यक़ीन ही न हो रहा था कि वह जो देख रहा है, वह सच है। उधर नोश लब की हालत भी वैसी ही थी जैसी राजकुमार की। अजब मलिक के बाल, उसकी आँखें, उसके होंठ, उसकी भौंहें, सब अंग इतने सुन्दर थे कि नोश लब की नज़रें उस के शरीर से हट ही न रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वह भी अपने होश व हवास खो बैठी थी। दोनों एक दूसरे को अपना दिल दे बैठे। दोनों को लगा कि एक दूसरे के बिना वह अधूरे हैं और एक दूसरे के बिना वह ज़िन्दा ही नहीं रह सकते। अजब मलिक ने नोश लब को अपने दिल की बात यूं सुनाई:

*च़ु क्याह ज़ानख च़ै प्यठ मॆहनथ तुजिम कुच़*
*च़ै छ़ांडान दर जहान मज़रत तुजिम कुच़*
*तुलिम कम कम सितम अज़ दोरे आफाक*
*ब़ु फ्यूरुस आलुमस गाह जुफ्त गाह ताक*
*च़ै होवथम रॊय कॅरथम मॆहरबॉनी*
*दिच़ुथ ज़न म्वरद़ जिस्मस ज़िंदगॉनी*
*छुसय ब़ु त्रेशि हॊत प्यठ नाग़ रादस*
*दितम अख शरबताह व्वन्य वात दादस*
*बरख ना माय म्यॉनी छुय सवाबाह*
*सप़ुनतम येल वनतम रुत जवाबाह*

नोश लब भी बेकरार थी। वह राजकुमार पर मर मिटी थी पर उस के सवालों का जवाब उसके पास न था। वह इनसान नहीं थी, परी थी। इसलिये उसका और अजब मलिक का मेल मुमकिन नहीं था। उसने जवाब दिया:

*च़्र छुख इनसान ब़ छस जिन्से पॅरी ज़ाद*
*म़ थक, छय अथ कलामस सुस्त बुनियाद*
*मे पथ ख्वद राव़रावख उम्र सॉऱय*
*लबख ऩ उलफत़च बोयाह मे लॉऱय*
*मुल़च कथ छय ब़ छस खोज़्रान पामन*
*मे छुम ना ज़ांह गोमुत आलूद दामन*

**(अगले अंक में जारी)**

---

धारावाहिक

# दास्तान-ए-गुलरेज़ -६

**म.क.रैना, मुम्बई**

---

*[पाठकगण ध्यान दें : मसनवी के इस भाग के अंत में दी हुई कविता 'व्यदाख' उस घटना को दर्शाती है जब कहानी की नायिका नोश लब नींद से जाग जाती है और नायक अजब मलिक को पास में न पाकर विलाप करती है। यह प्रसिद्ध कविता 'सुबुह फॉल, बुलबुलव तुल शौरो गौगाह' जिसे कश्मीरी काव्य में एक श्रेष्ठ स्थान हासिल है और जो कश्मीरियों में बहुत ही लोकप्रिय है, इस हिन्दी रूपांतर में बिना किसी काट छांट के शामिल की गई है। आशा है कि कश्मीरी समझने वाले पाठक इसे पूरा पढ़ेंगे और पसंद करेंगे। प्रसिद्ध लेखक टी.एन.कौल ने इस कविता के बारे में लिखा है: It is a masterpiece of sorts and the most splendid example of his (Karalwari's) art, which has remained unsurpassed so far. The 60 odd couplets deftly absorb and express the passionately intense yearning, pain and anguish ever suffered by a woman in Kashmir's literary history, Habba Khatoon and Arnimal notwithstanding.]*

---

## अजब मलिक नोश लब को मनाने के लिये विनती करता है ।

अजब मलिक नोश लब की बात मानने को तैयार न था। उस ने नोश लब को मनाने के लिये फिर विनती की :

*च़े छुय पॅज़्य् पॉठ्य दामन पाक थोवमुत*
*मे छुम दिल खस्तु सीनु चाक गोमुत*
*सुर कर दादि चाने कुस सितम गोम*
*गॉलुस यिथु नार डीशिथ छुय गलान मोम*

*जवॉनी सॉर च़े पथ रावरावुम*
*हकूमत सलतनत यकबार त्रॉवुम*
*कमाने चानि द्युतुनम तीर सीनस*
*छ्वकुलद छ्रठ दिवान छुस प्यठ ज़ॅमीनस*

पर नोश लब परी थी और इसलिये मजबूर थी। उस ने कहा :

*बन्योमुत ज़ांह छुना दर मुल्के आलम*
*पॅरी ज़ादन हिशर आमुत ब आदम*
*मे इनसानन हुंज़ुय छम ना मुलय पछ़*
*मु कर देवानुगी येति आख तोत गछ़*
*मु वव तथ जायि फल येति कॅह बोयी ना*
*गली तति ब्योल कॅह हॉसिल यियी ना*

राजकुमार अपनी जान पर खेल कर यहाँ तक पहुँचा था। वह किसी सूरत पीछे हटने को तैयार न था। विनती छोड वह अब नोश लब की खुशामद करने लगा। राजकुमार की बातें सुन कर नोश लब तंग आ गई। उस के सीने पर अब तक जो पत्थर रखा हुआ था, वह सरक गया। वह राजकुमार को बेहद चाहने लगी पर आगे बढ़ने से पहले वह राजकुमार को समझाना चाहती थी। उस ने कहा, ''मैं एक परी हूँ। मैं भी तुम्हें चाहने लगी हूँ पर तुम्हें मेरे साथ एक वादा करना होगा। तुम्हारा प्यार पवित्र होना चाहिये। इस में किसी प्रकार की अपवित्रता नहीं होनी चाहिये। यदि तुम्हें यह मंज़ूर हो तो मैं आगे बढ़ सकती हूँ। राजकुमार मान गया।

## अजब मलिक व नोश लब का मिलाप ।

अजब मलिक व नोश लब एक दूसरे के गले मिल गये। हाल ऐसा था जैसे दोनों उम्र भर के बिछडे हुये हूँ और अब मिल गये हूँ। बहुत समय तक दोनों के बीच बातें होती रहीं। अजब मलिक ने उसे अपनी कहानी सुनाई कि वह कौन है और यहाँ क्यों आया है। नोश लब ने उसे अपने बारे में बताया। दोनों ने एक दूसरे से वफादारी की कसमें खाईं।

*तिथय गॅय शाद गम मॉठ प्रोन बिलकुल*
*खुशी यिछ़ बुलबुलस डीशिथ गछ़ान गुल*

कुछ समय के बाद दोनों पीने पिलाने लगे। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक दोनों अपने होश व हवास खो बैठे। एक बार फिर वह एक दूसरे के गले मिल गये और एक दूसरे को यूंही पकड कर सो गये।

**गुलबदन बेगम नोश लब को ढूंढने निकलती है ।**

इधर अजब मलिक व नोश लब गहरी नींद में थे और उधर नोशि लब की माँ गुलबदन बेगम व नाज़ मस्त की माँ लडकियों के लिये परेशान हो रही थीं। दोनों लडकियां सुबह सवेरे बाग में घूमने के लिये निकले थे पर अभी तक वापस नहीं आये थे। गुलबदन ने सोचा कि लडकियां बहुत समय के बाद एक दूसरे से मिली हैं, शायद इसलिये उन्हें समय गुज़रने का एहसास नहीं हुआ होगा। लेकिन देर तक भी जब लडकियां वापस न आईं तो उन्हें फिक्र होने लगी। वह उन को ढूंढने के लिये निकल पडीं।

गुल बदन नाज़ मस्त व नोश लब को ढूंढने के लिये बाग में आ गई। उस ने दूर से किसी को ज़मीन पर सोते हुये देखा। पास आई तो उस के सर पर आसमान आ गिरा। देखा कि नोश लब किसी युवक से लिपट कर ज़मीन पर गहरी नींद सो रही है। उस की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे यकीन ही न हुआ कि उस की बेटी ऐसा कुछ कर सकती है जिस से उन के खानदान की बदनामी हो। उस के तन बदन में आग लग गयी।

*खजालॅच़ टोंगु ट्वख द्युतुथम नॅगीनस*
*फुटुम शीशु लॅजिम वॅन्य् आबगीनस*
*अदावथ यिछ़ कमिच ऑसुय च़े म्याॅनी*
*वॅुरथ रुसवाये आलम कूर म्याॅनी*
*सज़ा पानय लबख त्युथ युथ करख कार*
*ब्वी मा कॉल्य् गुल य्वद अज़ ववख खार*
*च़े छुय ना कॅह खता राह छुम मे पानस*
*मे पानय प्रान मिलुनोव ज़ाफरानस*

*खबर छनु क्याह च़े ऑसुय कीनु खॉही*
*तवय पुछ़ि रोबु ॲनिथम रू सियॉही*

**नोश लब व अजब मलिक जुदा हो जाते हैं ।**

नोश लब हालांकि गहरी नींद में थी लेकिन परी होने की वजह से वह माँ को देख भी रही थी और उस के बातें भी सुन रही थी। माँ का गुस्सा देख कर वह नींद में ही कांपने लगी और नींद में ही उस ने माँ से माफी मांग ली। लेकिन माँ पर कोई असर न हुआ। वह अब भी गुस्से में थी। नोश लब ने माँ का गुस्सा देख कर उसे अजब मलिक की कहानी सुनाई कि वह कौन है और यहाँ किस लिये आया है।

*स्व गॅयि शरमंद सोरुय हाल वोनुनस*
*तसुंद अहवाल व माहो साल वोनुनस*
*हकीकथ वाकई वॅनिनस मुफस्सल*
*खॅटिथ थोवुनस नु कांह हरफा न अमल*
*यि शाहज़ादय छु तुरकिसतानु आमुत*
*छु ॲश्कन ओनुमुतुय छुनु पानु आमुत*
*स्व बुड़ सुंज़ कीफियत तॅम्य् बॉवुनस सॉर*
*मुच़रनस सर ब सर सिरु किस गरस दॉर*

पर गुलबदन बेगम पर नोश लब की फरियादों का कोई असर न हुआ। उस ने अपने साथ आई हुई परियों को हुक्म दिया कि नोश लब को नवजवान से अलग कर दिया जाये।

*जुदा वॅल्य् वॅल्य् कॅर्यूख यिम अख ॲकिस निश*
*यि कथ गछ़ि युथ नु नॅन्य् कॉसि ॲकिस निश*
*तिथुय तुलिज़्योख गछ़न यिम युथ नु बेदार*
*खबरदार युथ नु यिम सपुनन खबरदार*
*ब खानय नोश लब गछ़ि वातुनावुन्य्*
*कुठिस पनुनिस अंदर ल्वति पॉठ्य सावुन्य्*

*हुमिस गछि गाश तुरकिस्तान हावुन*
*वुकरमन् सख्त दर वॉरान् त्रावुन*

परियों ने राजकुमार को अपने हाथों में उठाकर तुरकिस्तान पहुँचा दिया और नोश लब को गहरी नींद की हालत में ही उसके कमरे में पहुँचा दिया। न अजब मलिक को नोश लब के बारे में कुछ पता चला और न नोश लब को अजब मलिक के बारे में। दोनों अब भी गहरी नींद सो रहे थे।

**नोश लब जाग जाती है और विलाप करती है ।**

नोश लब जब जाग गई तो उस ने राजकुमार को पास में नहीं पाया। उस ने इधर उधर देखा और अपने आप को अपने घर में पाया। राजकुमार का कोई पता न था। उसे नींद में माँ को आते हुये देखने की बात याद आ गई। उसे याद आया कि उसकी माँ ने उसे राजकुमार के साथ सोते हुये देख लिया था और वह बहुत गुस्सा हो गई थी। उसने समझ लिया कि राजकुमार को उससे जुदा कर दिया गया है। उससे राजकुमार की जुदायी बर्दाश्त न हुई और उसने ज़ार ज़ार रोना और विलाप करना शुरू किया।

## व्यदाख

*सुबुह फॉल बुलबुलव तुल शोर-ो-गौगा, गॅयस बेदार, मुच़रॅम चॅश्मे शहला*
*खबर ऑसुम बु छस दरबर निगारस, मुकर्र गॉब छि पॅन्य् नॅंदर बहारस*
*नज़र त्रॉवुम न ज्यूठुम बाग नय गुल, न बूज़ुम अज़ चमन आवाज़ि बुलबुल*
*न ज्यूठुम यार नय गुलज़ार नय बाग, न रातुक ऑश इला बर जिगर दाग*
*गट् मीजिम, सुबुह सपनुम गमुक शाम, मुसीबत प्योम अश्क अज़ गम करिम दाम*
*हॅतिम वॅन्य् दिन्य् निगारस गुलाज़ारस, पसो पेशस यमीनस तय पसारस*
*वुछुम नु रोये ज़ेबा यार् सुंदुय, निशाना कांह ति तस दिलदार् सुंदुय*
*बजाये गुल ब-सीनु खार ज्यूठुम, ह्यॉतुम छांडुन खज़ानु मार ज्यूठुम*
*दपान ऑसुस दिलस बा चॅश्मे पुर आब, स्व मॅजलिस रातुची मा आसिहे खाब*
*सु ऑशा राहता द्वशवुन्य् ब्रेमा ओस, खुशी शूब्यस वुनन्य् कर मातमा ओस*
*मच़र ऑनुनम तच़र कॉरुनम बदुनस, वदान आलव हॅतिम दिन्य् तस मदुनस*
*निगारा बे मदारा सरदि महरा, बुता, माहे मुनीरा, खूब चहरा*

हॉंदुर लॅगिथ नॅंदुर पॉविथ च़ोलूहम, फिराका लुलुवुन त्रॉविथ च़ोलूहम
मतो च़लतम मत्यो मॅंच़रॉवुथस बो, यितो बॅयि सथ गछ़्यम मॅशरॉवथस बो
परन पादन प्यमय थॅवथम मे लादन, दितम सर आलवय आलव च़ु नादन
वदुन त्रॉविथ च़लुन च़ूरे रवा छा, थवुन युथ दाग मस्तूरे रवा छा
दुर फलि म्यानि कथ गोशस रॅटुथ जाय, च़े गोशन म्योन गॉय ना त्रॉवुथम माय
खॅरीदारो कम्यू बाज़ार छ़ारथ, मे तावन पोवुथम कमि वानु गारथ
हरेयस आरवल ग्वलाब़ बॉयो, दॅज़ुस महताब ज़न महताब रॉयो
पॅरी देवानु वॅरथस माह जबीनु, यिहम ना बहर लिल्लाह मह जबीनु
कमान ज़न गोम कद बद वलजमाले, सेंद्योमुत तीर अॅश्कुन हियु माले
ज़ूलेखा यूसफो च़े पथ अनेयस, मतेयस वामिको अज़रा बनेयस
ब-तल्खी छस दिवान शीरीन फॅरियाद, गछ़्यम ना पॉदु ख्वश दीदार फरहाद
कॉतू च़ोलुहॅम मत्यो मजनून म्याने, मे थॉवथम दोद लुलुवुन लॉलि जाने
थफा दिथ नकदि दिल ह्यथ दूर गोहम, जफा कारो शिलस सॅन्य् चूर प्योहम
मदन वारो बदन गोहम मे ज़ॉलिथ, ह्यकय नो दूरिरुक आतश बॉ च़ॉलिथ
मलालु गॉय कम्युक, कवु पुच़ि मे रूठुक, वॅंमिस ताले वरस इकबाल ब्यूठुक
चरागे खुरमी छ़ेवुरिथ गमुक वाव, अनि गॉट गोम माह रवखसारु म्वख हाव
फरोगे नूरे माह रवख च़ूरि हावुम, बिहिशतियो जमाला हूरि हावुम
पतु यिमुहय अमा वथ छम नु मोलूम, नतु ज़ुरहा नु हिजरुक तीरि मसमूम
शेछा लुदहय अमा कांह छुम नु दरदिल, च़े थॉवुथम लालु रोयो दाग बर दिल
कुसू सोज़य, कुसू बावी यि तकरीर, पक्यम कुस तॉत सिवाये बादि शबगीर
यितो हा सुबुह के ख्वशबोयि वावो, नितो तस गुलाज़ारस म्यानि ग्रावो
ज़ि गरदि राह च़ु दामन दुन्यज़ि अवल, पस अंगु नॅट्य नॅट्य गॅछ़िज़्यस बरस तल
अदब रॅछ़िथुय सदा वॅर्यज़्यस ब हलकु, खबर आहस्तु वॅन्यज़्यस मॉदरि हलकु
जफा अंदेशि कस त्रॉविथ स्व मज़लूम, कॉरुथ क्याह थामि लॉजिथ पामु मॉसूम
मुहिथ गव ह्यन वॅनिथ छनु कॉंसि ज़ानान, वुहिथ गॅयि चानि पच़ि ऐ जाने जानान
पर्युन सीनस सपुद तस चानि होलु, च़ु डॉलुहस लोलु रस्त्यो अहदो कौलु
मे वॅर्यथम होलु सुत्य् परकालु पानस, कवो च़ुय लालु फॉरुहम बालु पानस
मुदा ऑसुय करुन्य् ऑखुर जुदॉयी, यॉहय छा सॉ तॅरीके हक अदॉयी
शिकस्तु दिल वॅरिथ तनाज़ो मगरूर, समन अंदामु ब्यब बॅरुथस बज़ंबूर

*हतो वावो च़ॖ क्या ज़ानख मे क्या गव, गॅमॖत्य् छिम वॉलिंजे दमगीरॖकी स्त्रव*
*बिहिथ कथ गुलशनस मंज़ गुल अंदाम, सही सरवुन सही ॲन्य्ज़्यम मे पॉगाम*
*ह्यसॖ डॅजॖरॉवॖनस मस दिथ मसॉछिव्य्, बन्यम नय मल वुन्यम दामानॖ रिव्य् रिव्य्*
*छ़ोतॖ मशाल गॅयस यावुन व्यतॖ गोम, स्वतेयस वॅद्य वॅद्य शोरस ज़्यत। प्योम*
*तनूरस अश्कुनिस मंज़ छस हतब ज़न, वनस दॅदॖवन कोरुम तॅम्य् सरवि सब्ज़न*
*खज़ान च़ाम अच़ॖवॖन्य्सॖय बहारस, सुली द्वह लूसिथॖय गव पोह हारस*
*हॅदॖर ज़न गॅजसॖ श्रावनॖ आफताब, ब-ताबम चूं तपद माही ब–ताब*
*फ्वलॖवन्य् सॖय बहारस ॲर्यनि रंग गोम, म्वलॖलिस ऑशिकिस खॅज़ॖरस श्रंग गोम*
*दु-हफ्तॖचि ज़ूनि सर तुलिथॖय ग्रुहुन प्योम, शोगूफस शीन गुलज़ारस क्रुहुन प्योम*
*हियि थॅर यावॖनॖन्य् कॅरथम बॖर मे, ज़रॖ ज़रॖ सीम तन ज़ॉजॖथ ज़रॖ मे*
*शमा सूरत बॖ छस गायान व सोज़ान, चू परवानॖ, सु बे परवानॖ बोज़ान*
*यॅँबरज़ल तस बॅँबूरनि मायि वॅजॖनस, फ्रॆकॖवॖन्य् च़ॅर ग्रकॖवनि तावॖ तॅजॖनस*
*फ्वलॖवॖन्य् पोशि थॅर छॅच़ॖरॉवॖनस बॅ, असॖवॖन्य् वॅद्य वॅदी व्यसॖरॉवॖनस बॅ*
*सनोबर कामतन हॅज वीर कॅरॖनस, स्वनस सरतल गॅयम, तशहीर कॅरॖनस*
*सरुक पम्पोश ऑसॖस फोजिमॖच़ॖय हॉर्य, कॅरॖस गरकाब गमे ख्वरशीद ख्वखसॉर्य*
*दुपहरन शाम मे गोम खाम कारे, दुरस गोम फोतॖ रूदुम तोतॖ हारे*
*गॅजॖस कॅज कामॖ दीवॖनि आमॖनेयस, लोगुम दरॖ लावि मूरे आवॖसेयस*
*कबाबॖक्य् पॉठ्य तॅजॖनस गरॖम तावे, अडॖ दॅज़ च़ॖन्य् गॅयम सरमूरि लावे*
*च़ॅटिथ कॅम्य् शॅत्रॖनय लोगुम मित्र मे, लॅदिथ तासस पॆयम तोसस ॲथॖर मे*
*तिथिस जानानॖसॖय रोस्तुय लसा बो, सु त्रॉविथ गॉरॖनॖय सॗत्यन बसा बो*
*सु त्रॉविथ कर यियम नेंदॖर तॖ नेह मे, सु त्रॉविथ शरबते शीरीन छु वेह मे*
*गुलिस्ताने बे ख्वखि गुल ख्वख छु ज़िंदान, सरीरुक न्वक्तॖ सॅँगीन तर ज़ि सिंदान*
*सु त्रॉविथ मंगॖ क्या यथ पॉट्य प्रंगस, सु त्रॉविथ माज़ॖ कर बॅ नक्शो रंगस*
*सु त्रॉविथ कर गुलन प्यठ दिल लग्यम मे, चो बुलबुल बाग छावुन कर तग्यम मे*
*बिहिश्ते जाविदां दोज़ॖख चू बे यार, ब-तन ज़ंजीर ज़ेवर तख्त ज़न दार*
*बसर अफसर गमुक कर गॉरि दिलबर, ब-पहलू फरशि मखमल खार बसतर*
*सरासीमॖह गॅयस जामन द्युतुम चाख, मोलुम ऑयीनॖ खानस सूर तय खाक*
*व्यदाख ऑसॖस दिवान हिजॖरच करान ल्यल, व्वलो कॅरॖथस बॖर ताज़ॖ यॅँबॖरज़ल*

**(अगले अंक में जारी)**

धारावाहिक

# दास्तान-ए-गुलरेज़ - ७

म.क.रैना, मुम्बई

## गुलबदन बेगम नोश लब को जानवर बनाती है :

गुलबदन बेग़म नोश लब का विलाप देख कर और गुस्से में आ गई। उस ने बेटी से कहा:

*कॅमी शॅत्रन च़ु अथ यिछि नावि वॉजिख, मित्र लॉगिथ कॅमी तछि तावि ज़ॉजिख*
*हया बर ताक थॉवुथ शर्म त्रॉवुथ, पॅरी क्रॉनिस खजालथ वातुनॉवुथ*
*कॅबीलस मंज़ च़ै पानस दाग थोवुथ, ब-दुनिया नाव सोनुय मंदछोवुथ*
*गॅयख अज़ कारे बद बदगारो बदनाम, थॅवुथ पानस पॅरी क्रॉनिस अंदर पाम*

गुलबदन बेग़म ने नोश लब को बहुत बुरा-भला कहा। नोश लब रो रही थी। उस की माँ किसी सूरत में उस को माफ़ी देने के हक़ में न थी। उस ने कोई मंत्र पढ़ा और बेटी के मुँह पर फूंक दिया। नोश लब तुरंत एक पक्षी में तबदील हो गई। माँ ने फैसला किया कि उस की बेटी हमेशा के लिये पक्षी बन कर ही रहेगी क्योंकि पक्षी के रूप में वह लोगों से छिपी रहेगी और उन की बदनामी नहीं होगी।

पक्षी बनने के बाद नोश लब पूरी दुनिया में घूमती रही और अजब मलिक को ढूँढ़ती रही। इस तरह दस साल बीत गये लेकिन अजब मलिक का कोई पता न चला।

## मासूम शाह नोश लब की कहानी सुन कर दुखी हो जाता है :

पक्षी (जो वास्तव में नोश लब थी) ने कहानी ख़त्म की। उस ने मासूम शाह से कहा, ‘‘आज मैं दस साल से इसी सूरत में हर शहर, हर गाँव, पहाड, बियाबान, समंदर ग़रज़ हर जगह घूम रही हूँ पर मुझे मेरा यार नहीं मिला। आप को देख कर मुझे ऐसा लगा जैसे आप

की सूरत में वही मेरे सामने हो। इसीलिये मैं जान बूझ कर आप के जाल में फंस गई।'' मासूम शाह ने उस को दिलासा दिया:

*दॉपुन तस रोज़ ख्वश गम त्राव सॉरी, करय ब्र अथ गमस मंज़ गम गसॉरी*
*मुसॉफिर लॉगिथ्रय हमराह ह्यमथ बॅ, सु दिलबर चोन छ़ांडन हर सिमत बॅ*

मासूम शाह ने पक्षी से वादा किया कि वह उसको अजब मलिक से मिला देगा। पर पक्षी को यक़ीन न हुआ कि मासूम शाह जैसा मासूम इनसान उस की कोई मदद कर पायेगा। पक्षी ने मासूम शाह को एक कहानी सुनाई।

**ज़रूरत :**

इब्राहीम नाम का एक बुज़ुर्ग आदमी था। बारह साल से उस का नफ़्स उससे एक अनार खाने की मांग कर रहा था। केवल एस अनार, खट्टा या मीठा जो भी मिले, लेकिन इब्राहीम ने अपने नफ़्स की यह ख़्वाहिश कभी पूरी न की। एक दिन वह एक दरवेश के पास गया। दरवेश बीमार था। सलाम करके इब्राहीम ने पूछा, ''आप की कोई तमन्ना हो तो मुझे बताइये, मैं पूरी कर दूंगा।'' दरवेश ने कहा, ''मरहबा! क्या ख़ूब कहा! अपने नफ़्स की तमन्ना तुम पूरी न कर सके, मुझे क्या दोगे? जो आदमी अपनी ज़रूरत पूरी नहीं कर सकता है, वह लोगों को क्या दे सकता है?''

कहानी सुना कर पक्षी ने मासूम शाह से कहा :

*दॉपुन मॉसूम शाहस कुन ब-तॉज़ीम, मे हाजथ नेरि नु पानस च़े छ़ुय बीम*
*बनी नु यस कडुन हाजथ पनुन ज़ांह, मुरादे दिल वनुन तस हॉसली क्याह*

मासूम शाह को पक्षी की बात वज़नदार लगी पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने पक्षी से कहा, ''असल में तुम में ख़ुद ईमान की कमी है। ख़ुदा हर एक की मुराद पूरी कर देता है। हर रात के बाद अंधेरा खत्म हो जाता है और नया सवेरा रोशनी लेकर आता है। आख़िर वही होता है जो ख़ुदा को मंज़ूर होता है।'' इस बात को ठीक से समझाने के लिये मासूम शाह ने पक्षी को एक कहानी सुनाई।

**हारून रशीद और राजकुमार :**

एक राजा था। नाम था हारून रशीद। हारून रशीद बहुत ही अमीर, दान करने वाला और दयालु इनसान था। वह ख़ुदा की इबादत भी बहुत करता था। कहते हैं कि एक दिन हारून रशीद अपने बाग़ में अकेला बैठा ख़ुदा को याद कर रहा था कि सामने एक पक्षी नमूदार हुआ। पक्षी बहुत सुंदर था। उसका सिर हरे रंग का था और उसके पर लाल रंग के। हारून रशीद को पक्षी बहुत पसंद आया। ज्योंही पक्षी हारून रशीद के पास आया, उस ने झपट कर उसकी टांग पकड ली। पक्षी तुरन्त आकाश की तरफ उडने लगा और हारून रशीद उसकी टांग के साथ ही लटकता रहा। राजा का दम घुटने लगा लेकिन वह पक्षी की टांग छोड भी नहीं सकता था। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया और जिंदा रहने की उम्मीद जाती रही। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

*हॆचन नु चॆश्म मुच़रिथ त्यूत गव तंग, न ज़ोनुन वार तस अथु त्रावुनस ज़ंग*
*छु सार्यन टोठ ऑखुर जाने शीरीन, सु दुनियादार ऑसिन या सु मिसकीन*

पक्षी पहाडों और समंदरों के ऊपर उड कर एक द्वीप में जा पहुँचा। राजा ने ज्योंही नीचे ज़मीन देखी, उसे बचने की आशा दिखाई दी। पक्षी ज़मीन पर उतर गया। राजा ने पक्षी की टांग को छोड दिया और अपने आप को सही सलामत देख कर ख़ुदा का शुक्र अदा किया। पक्षी राजा को छोड उड कर वापस चला गया। राजा द्वीप पर अकेला था। उस ने सोचा शायद मुझ से कभी कोई पाप हुआ होगा जिस की सज़ा अब मुझे मिल रही है। फिर भी अपने आप को तसल्ली दी कि जो क़िस्मत में लिखा होगा, मिलेगा।

हारून रशीद अभी सोच ही रहा था कि उसे समंदर में नाव चलने की आवाज़ सुनाई दी। उस ने ध्यान से देखा, एक नाव समंदर के किनारे लग रही थी। कुछ देर बाद उस में से बहुत से आदमी नीचे उतर गये। उन में एक राजकुमार था और बाक़ी उस के अमीर व वज़ीर। देखते ही देखते राजकुमार के लिये एक विशाल सायाबान खडा कर दिया गया। ज़मीन पर मख़मल का फ़र्श बिछाया गया और राजकुमार के लिये शाही तख़्त लगाया गया। राजकुमार तख़्त पर बैठ गया। बाक़ी लोग अदब से खडे रहे। फिर एक एक करके सब लोगों ने राजकुमार से जाने की आज्ञा ली और जिस नाव में आये थे, उसी में वापस चले गये।

हारून रशीद हैरान था कि आख़िर राजकुमार को इस द्वीप में अकेला क्यों छोडा गया। वह राजकुमार के पास आया। उस को सलाम की। इस से पहले कि हारून रशीद उस से कुछ पूछता, राजकुमार ने उस से सवाल किया, ''आप कौन हैं और इस द्वीप में अकेले क्या कर रहे हैं?''

*कुनुय ज़ॉन, सुत्य छुय ना कांह रफीका, न यारा दोस्ता नय कांह शॅफीका*

हारून रशीद ने सच को छिपाया। उस ने राजकुमार से कहा, ''मैं एक सौदागर हूं। मैं एक जहाज़ में सवार था और बहुत सारा माल लेकर घर लौट रहा था कि समंदर में तूफान आ गया। मेरा जहाज़ डूब गया और साथ ही मेरे सारे आदमी भी उस में डूब गये। मैं ने बडी मुश्किल से अपने आप को बचाया और इस द्वीप तक आ पहुँचा। आप को यहाँ देख कर मुझे बडी खुशी हुई और इसीलिये आप से मिलने आ गया।'' राजकुमार भी हारून रशीद को देख कर खुश हुआ। उस ने कहा, ''माल जायदाद की आप चिंता न करें। मैं आप का सारा नुक़सान भर दूंगा। आप बस खुश रहें।'' हारून रशीद ने कहा, ''मैं आप को देख कर ही जान गया था कि आप कोई राजकुमार होंगे। अब मुझे यह बताइये कि आप कहाँ से आये हैं और इस द्वीप में अकेले क्या करेंगे। आप के बाक़ी आदमी आप को इस वीराने में छोड कर वापस क्यों चले गये?''

*सबब वनतम बिहिथ छुख क्याज़ि तन्हा, न हमदम सुत्य छुय, न हम सुखन हा*
*ब तन्हॉई व वहदत क्याह मुदा छुय, पनुन छुयि ज़ोक किनु शोके खुदा छुय*

राजकुमार ने कहा, ''मैं एक देश का राजा हूं। मेरा देश बहुत बड़ा है और मेरे अमीर व वज़ीर बड़ी सोच वाले लोग हैं। उन के पास हर सवाल का जवाब है और उनसे कोई बात छिपी नहीं रहती। उन्हों ने मुझे बताया कि आने वाला महीना मेरे ऊपर बहुत भारी है और मेरे लिये महीने के अंत तक अपने देश में रहना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा है कि मुझे एक आदमी की तरफ से, जिस का नाम हारून रशीद है, बहुत तकलीफ पहुँचने वाली है। यदि मैं अपने देश में रहूंगा तो वह कहीं से भी आकर मुझे मार डालेगा। इसलिये मेरे वज़ीरों ने मुझे सलाह दी कि मैं इस द्वीप में रह कर एक महीना गुज़ारों। उन का कहना है कि हारून रशीद यहाँ नहीं पहुंच सकता।''

*सॅमिथ तदबीर ठॅहरॉवुख वॅज़ीरव, तिमन म्योनुय गरे नेरुन सलाह प्यव*
*सलाहे नेक वॉनुहम छुय च़े बॅहतर, सॉकूनथ मंज़ जुविस माहस नॅविस कर*

हारून रशीद ने जब राजकुमार की ज़बान से अपना नाम सुना तो हैरान हो गया। उसे राजकुमार से कोई दुश्मनी न थी इसलिये उसे मारने का कोई सवाल ही नहीं था। हारून रशीद ने सोचा, शायद राजकुमार के वज़ीरों ने कोई चाल चली है। राजकुमार को इस द्वीप में भेजकर वह उस का राज-पाट हड़पना चाहते है। पर उस ने राजकुमार से इस बारे में कोई बात नहीं की।

राजकुमार खुश था कि वह ऐसी जगह आ गया है जहाँ कोई उस का बाल भी बाँका नहीं कर सकता। उस ने अपने साथ लाया हुआ खाने पीने का सारा सामान बाहर निकाला जिस में नान, कबाब, बिरयानी सब कुछ था और जो राजकुमार के लिये पूरा एक महीना चला सकता था। राजकुमार ने हारून रशीद से कहा, ''आप भी भूखे लग रहे हैं। मेरे साथ बैठ कर आप भी खाना खा लें।'' हारून रशीद मान गया। राजकुमार ने चाकू हाथ में लिया और बकरे की रान से एक एक टुकडा काट कर खुद हारून रशीद को खिलाता रहा।

*कलम त्राशा कॉडुन नोज़ुक स्यठाह तेज़, वुरिथ तथ माज़ आपुरनस वॅंरिथ तेज़*

हारून रशीद ने पेट भर कर खाना खाया। अब शराब का दौर चला। हारून रशीद ने राजकुमार से कहा, ''आप की मेहमान नवाज़ी देख कर मैं बहुत खुश हूं और आप का शुक्र गुज़ार भी हूं। मैं चाहता हूं कि मैं भी आप को अपने हाथों से कुछ खिलाऊ।

*सपुन हारून रॅशीद ममनूने एहसान, दॉपुन शाहज़ादस ऐ यारे वफादार*
*च़े मॅहमान दॉरिया वॅंरथम ब खूबी, मावज़ु खॅदमथाह च़े ति म्यॉन्य शूबी*

राजकुमार ने हारून रशीद को इजाज़त दी कि वह उसे अपने हाथों से खाना खिलाये। हारून रशीद ने चाकू की नोक से गोश्त का एक बडा टुकडा उठाया और राजकुमार के मुँह में डाल दिया। अचानक राजकुमार को ज़ोर की छींक आ गई और चाकू उस के गले के

अंदर चला गया। राजकुमार के मुँह से खून का दरिया निकल पडा और कुछ ही समय में वह मर गया।

*कज़ा ज़ांह फेरि न हरगिज़ ब तकदीर, कज़ा लारान पतु प्रारान छु तकदीर*

हारून रशीद दुखी भी हुआ और हैरान भी। उसने ख़ुदा की ख़ुदावंदी को इतना क़रीब से देखा पर अपने आप पर वह शरमिंदा हो गया। किसी कारण के बिना ही वह राजकुमार का गुनहगार हो गया। अब उस की समझ में आया कि पक्षी उसे उठाकर इस द्वीप में क्यों लेकर आया था। वह कुछ सोच ही रहा था कि वही पक्षी फिर द्वीप के ऊपर उडता हुआ आ गया और हारून रशीद के सामने खडा हो गया। हारून रशीद सब कुछ समझ रहा था। उस ने पक्षी की टांग पकड ली और पक्षी उड गया। कुछ देर बाद पक्षी ने उस को वापस अपने बाग़ में उतार दिया।

*गुलिस्तान डीशिथुय मसरूर गव शाह, ब हॉरथ ओस, कोत वोतुस वुछुम क्याह*

**मासूम शाह नोश लब को साथ लेकर निकलने की तैयारी करता है :**

कहानी ख़त्म करके मासूम शाह ने नोश लब से कहा, ''जिस की क़िस्मत में जो लिखा है, वह उसे मिल कर ही रहता है। अगर तुम्हारी क़िस्मत में भी तुम्हें अपने यार से मिलने की बात लिखी होगी तो ज़रूर पूरी होगी।'' मासूम शाह यह कहकर लेट गया और लेटते ही उसे नींद आ गई। दूसरे दिन सवेरा होने पर मासूम शाह जाग गया। वह पक्षी के पास आया और उससे पूछा, ' आज रात तुम्हें नींद आई कि नहीं ?'' पक्षी ने कहा:

*दॉपुस तमि यस बुछिथ च़लि कालु शाहमार, तॅमिस आरामु सुय सुत्यन छु क्याह कार*
*दज़ान युस लोलु नारस मंज़ छु हर दम, तॅमिस क्युत छुय जहानुक ऑश मातम*

पक्षी के रूप में नोश लब रो रही थी और विलाप कर रही थी। वह अजब मलिक से मिलने को बेक़रार थी। मासूम शाह से उस की हालत न देखी गई। उसने अपने आदमियों को सफर पर निकलने की तैयारी करने का हुक्म दिया। शाम को सूरज डूबने के समय मासूम

शाह ने पक्षी को पिंजरे समेत हाथ में उठाया और सफ़र के लिये निकल पडा। मासूम शाह के गुलाम भी उस के साथ थे।

मासूम शाह बैयतुल अमान की तरफ जा रहा था। सफ़र बहुत लम्बा और मुश्किल था। कहीं रुके बिना ही वह दिन रात चलते रहे। गुलाम और दूसरे लोग बहुत थक चुके थे। एक एक करके वह सब मासूम शाह को छोड कर चले गये। मासूम शाह अकेला रह गया फिर भी उस ने हिम्मत न हारी। पिंजरे को अपने सिर पर रखकर वह आगे बढ़ता रहा और कुछ दिनों के बाद बैतुल अमान पहुँच गया। पिंजरे को एक पेड़ की डाली से लटकाकर वह कुछ देर आराम करने के लिये बैठ गया। ज्योंही बैतुल अमान के दैत्यों की नज़र उस पर पडी, वह उसे मारने के लिये आ गये। एक दैत्य ने पूछा, ''तुम कौन हो और यहाँ किस लिये आये हो?'' मासूम शाह ने कहा, ''मैं एक लम्बा और मुश्किल सफर करके यहाँ आया हूं। मेरे साथ नोश लब है और मैं उसे उसकी माँ से मिलाना चाहता हूं।'' दैत्य नोश लब का नाम सुन कर खुश हो गये और उन्होंने तुरंत इसकी खबर नोश लब की माँ तक पहुँचा दी।

*खबर यॅलि कोरि हुंज़े माजि बूज़ुन, वॅनीज़ाह शाहज़ादस निशि सूज़ुन*

नोश लब की ख़बर पाते ही गुलबदन बेग़म ने एक कनीज़ मासूम शाह के पास भेज दी। कनीज़ ने मासूम शाह से गुलबदन बेग़म के पास आने को कहा। मासूम शाह ने पिंजरे को पेड पर ही रहने दिया और ख़ुद गुलबदन बेग़म से मिलने के लिये आ गया। गुलबदन बेग़म ने मासूम शाह को अकेला ही पाया। नोश लब उसके साथ नहीं थी। गुलबदन बेग़म अपनी बेटी के बारे में सुनने को बक़रार हो गई।

*ब जल्दी कोरि हुंद पॉगाम वनतम, गॅयस बे ताब नारस आब छुनतम*
*दॉपुस तमि क्याह च़े छुय पॉगाम ऑनमुत, जिगर छुम बहरे द्वख्तर खून सपुनमुत*

**(अगले अंक में जारी)**

———————————————————————

# दास्तान-ए-गुलरेज़

## (अंतिम किस्त)

**म.क.रैना, मुम्बई**

**मासूम शाह नोश लब को उसकी माँ के साथ मिला देता है :**

मासूम शाह ने गुलबदन बेग़म की बेक़रारी देख ली। उस ने कहा:

*दॊपुस तॅम्य् छम मॆ ॲन्यमुच़ सुत्य पानस, ब सख्ती वॉत्य ॲस्य बैयतुल अमानस*
*सफर यॊद सख्त द्रन वॅरियन कॊडुम क्रूठ, मॆ गॅय कॊठ्य छ़ोट्य अद् दौरान गमुक ज़्यूठ*

गुलबदन बेग़म की आंखों में आंसू आ गये। उस ने मासूम शाह से प्रार्थना की कि वह उसे उसकी बेटी का दीदार कराये। मासूम शाह वादा करके निकल गये और पिंजरे को लेकर लौट आये। माँ पिंजरे के अंदर बैठे पक्षी की हालत देख कर रो पडी। उसने हाथ उठाकर दुआ माँगी और पक्षी उसकी बेटी की शक्ल में वापस आ गई। गुलबदन बेग़म ने बेटी को गले लगा लिया।

*वॊदुख डीशिथ ॲकिस अख माजि कोर्यव, च़्रॆ तु मॆ वुछ तु दूर्यर क्याह ज़रुन प्यव*
*जुदॉयी वुछतु क्या गॅयि ज़िंदु पानय, लीखिथ ती ओस नाहक गव बहानय*

गुलबदन बेग़म को यकीन ही नहीं हो रहा था कि उस ने अपनी बेटी को वापस पा लिया है। बेटी से भरपूर प्यार करने के बाद गुलबदन बेग़म ने पूछा, ''जिस आदमी ने तुम्हें यहाँ तक पहुँचाया है, वह कौन है और कहां से आया है?'' नोश लब ने कहा, ''वह कोई आम इनसान नहीं हैं।। वह नख्शब देश के राजा हैं और उनका नाम मासूम शाह है।''

*वनय क्याह क्युथ छु मॉलिस टोठ फरज़ंद, ब ज़ॉरी छुन यि मॉगमुत अज़ ख्वदावंद*
*यि द्युतुमुत छुय तिमन मँग्य् मँग्य् ख्वदायन, वुछान ऑसिस तिमय छ़ायन तु ग्रायन*

इस के बाद नोश लब ने मासूम शाह की पूरी कहानी अपनी माँ को सुनाई कि किस तरह उन दोनों की मुलाकात हो गई और किस तरह वह यहाँ तक आ गये। पूरी कहानी सुन कर गुलबदन बेग़म मासूम शाह की शुक्रगुज़ार हो गई।

*यि मुश्किल गोम चाने सुत्य् आसान, ब् वॅरुथस वारुयाह ममनूने एहसान*
*दुबारु ज़िंदगॉनी अज़ च्रे दिच्युथम, फिदा सपनय मे लादन चॉन्य बड छम*

**गुलबदन बेग़म नोश लब की शादी अजब मलिक से करने को तैयार हो गई:**

गुलबदन बेग़म बेटी को अपने पास देख कर बहुत भावुक हो गई। उसने उसी समय नोश लब को मासूम शाह के हवाले कर दिया और कहा, ''मैं अपनी बेटी आप को सौंप रही हूँ।'' पर मासूम शाह को नोश लब नहीं चाहिये थी। उस ने गुलबदन बेग़म से कहा, ''मैं ने हमेशा नोश लब को अपनी बहन समझा है। मैं उससे कैसे शादी कर सकता हूँ? क्या आप अपनी बेटी की शादी मेरे बदले उसी बुलबुल से नहीं कर सकती जिस के प्यार में उस ने इतनी मुसीबतें झेलीं और जिस के प्यार को लेकर वह अब तक जिन्दा है?''

गुलबदन बेग़म नोश लब की शादी अजब मलिक से करने को तैयार हुई। उसने कहा, ''पर अजब मलिक का तो कोई अता पता नहीं। यह भी मालूम नहीं कि वह ज़िंदा है या मर चुका है। मैंने उसे तुरकिस्तान में एक वीरान जगह पर पहुँचाया था। वहाँ उस का क्या हाल हुआ, मुझे कुछ मालूम नहीं।'' मासूम शाह ने कहा, ''मेरी मानें तो एक क़ासिद को बहरीन देश में नाज़ मस्त से मिलने के लिये भेज दें। अगर अजब मलिक ज़िंदा होगा तो वह नाज़ मस्त से मिलने ज़रूर आता होगा। मुझे यक़ीन है कि नाज़ मस्त को उसके बारे में पूरी जानकारी होगी।''

नोश लब ने नाज़ मस्त को देने के लिये एक पत्र लिखा। पत्र में उसने अपना और अपने दिल का पूरा हाल लिखा और उससे प्रार्थना की कि वह उसकी बात अजब मलिक तक पहुँचादे। उसने लिखाः

*वॅसिये गुलन आवय बहार, अज़ साल अनतन बाल यार*
*वॅल्य् वॅल्य् अनुन फॅल्य् लाल ज़ार, अज़ साल अनतन बाल यार*
*तस कुन मे कल छम राथ द्यन, छस तंबलेमुच़ कर वुछन*
*यिमुहस पतय तथ छुम नु वार, अज़ साल अनतन बाल यार*
*परवानु रोयस गथ करस, तथ शमा रोयस तल मरस*
*छम कल तॅहुंज़ म्वल छुम नु हार, अज़ साल अनतन बाल यार*

**अजब मलिक नाज़ मस्त से मिलने आता है:**

नोश लब ने पत्र क़ासिद के हवाले किया और उसे ताकीद की कि वह बहरीन देश जाकर वह पत्र नाज़ मस्त तक पहुँचा दे। क़ासिद ने ऐसा ही किया।

नोश लब का हाल जान कर नाज़ मस्त रो पडी। क़ासिद से उसे पता लगा कि नोश लब की माँ ने अजब मलिक को नींद में ही उठा कर तुरकिस्तान पहुँचा दिया था और उस के बाद उस की कोई खबर न मिली। नाज़ मस्त अभी क़ासिद से बात कर ही रही थी कि एक कनीज़ ने आकर बताया कि अजब मलिक महल के दरवाज़े पर खडा है। खबर मिलते ही नाज़ मस्त पागलों की तरह दोड़ पडी और बाहर निकल कर अजब मलिक से मिली।

अजब मलिक का हाल बहुत बुरा था। उस के चेहरे का रंग फीका पड चुका था। नाज़ मस्त ने उसे एक भाई की तरह गले लगाया और उसे अपने साथ महल के अंदर ले आई। वहां अजब मलिक ने उसे अपनी कहानी सुनाई। उसने कहा, ‘‘मैं तुरकिस्तान के वीरानों में भटकता रहा लेकिन मुझे मौत नहीं आई। शायद खुदा ने मेरी क़िस्मत में ज़िंदा रहना ही लिखा था। तुरकिस्तान से निकल कर मैं कितने सारे देश घूम कर आया लेकिन नोश लब का कहीं पता न चला।

अजब मलिक की बात सुन कर नाज़ मस्त ने उसे नोश लाब की कहानी सुनाई और उसे वह पत्र भी पढ़ कर सुनाया जो नोश लब ने भेजा था। नाज़ मस्त ने नोश लब के नाम एक पत्र लिखा जिस में उसने अजब मलिक के वहाँ पहुँचने की बात भी लिखी।

*बुलबुल गुलन छु गारन, परवानु शमा छ़ारन*
*बोंबुर हमेशु लारन यॅंबुर ज़लन मुबारक*
*माह रोयि हाव नॊन म्वख, ज़ांह कर बलन तिमन द्वख*
*जिगरस लगन यिमन छ्‌वख प्यठ त्यॊगुलन मुबारक*

नाज़ मस्त ने पत्र क़ासिद के हवाले किया और क़ासिद ने उसे नोश लब के पास पहुँचा दिया। पत्र पढ़ कर और अजब मलिक के बारे में सुन कर नोश लब की जान में जान आ गई। उस का चेहरा गुलाब की तरह खिल उठा। माँ के पास जाकर उसने पत्र माँ को पढ़ कर सुनाया। गुलबदन बेगम ने मासूम शाह को बुलाया और उसे यह नई कहानी सुना दी। उस ने मासूम शाह से कहा, ''अब आप बताइये कि मैं क्या करूं?'' मासूम शाह ने कहा, ''दो दिलों को आपस में मिलाने में देर नहीं करनी चाहिये। हमें जल्द से जल्द अपना लाव लशकर, साज़ व सामान लेकर बहरीन देश के लिये निकलना चाहिये और नोश लब की मुलाकात अजब मलिक से करवानी चाहिये।''

**गुलबदन बेग़म नोश लब को लेकर बहरैन पहुँचती है:**

गुलबदन बेग़म को मासूम शाह की बात पसंद आई। उसने जाकर यह कहानी मशहूर शाह को भी सुनाई। दोनों इस बात पर राज़ी हो गये कि नोश लब और अजब मलिक को आपस में शादी करने की इजाज़त दे देनी चाहिये। गुलबदन बेग़म ने मासूम शाह से खुश होकर उसे काफी ज़र व ज़ेवर इनाम में दिया।

हर तरफ जशन का माहौल था। नोश लब दुलहन बनी हुई थी। उस की सहेलियों ने उस के शरीर पर काफूर व संदल की इत्र लगाई। उसे शाहाना पोशाक व कीमती ज़ेवर पहनाये गये।

*प्रज़लवुन ह्रूर बुथ ज़न नूरि मशाल, ज़ि जलवह ऑस नेरान नारु वुज़मल*
*पॅरी रवख क्याह सपुन्य् माह पैकराह ज़न, प्रयिवुन्य् ख्वश यिवुन्य् पोशि थॅराह ज़न*

दुलहन व अपने पूरे परिवार के साथ गुलबदन बेग़म बैतुल अमान से निकल कर बहरैन देश पहुँच गई। मासूम शाह भी साथ आये। बहरैन पहुँचते ही उन की ज़ोर शोर से आवभगत की गई। नाज़ मस्त के पिता सिपाह सालार को जब यह खबर पहुँची कि नोश लब अपने माता

पिता के साथ शहर में आई है, वह स्वयं उन्हें लेने के लिये आन पहुँचे। अजब मलिक ने मासूम शाह के चरण छू लिये।

*दुआ कोरुनस ख्वरन तल त्रोवनस सर, च्रे बॅलरोवुथ मे सॉनुमुत अॅश्कुनुय ज़र*

शादी की तैयारियाँ ज़ोर शोर से होने लगीं। नाज़ मस्त के पिता सिपाह सालार अजब मलिक की तरफ से खडे हो गये। शाही खान-पान का इन्तिज़ाम किया गया। दूल्हे को सजाया संवारा गया। लोगों में शीरीं व शरबत बांटी गई। संगीत की महफिल सजायी गई। नोश लब के पिता मशहूर शाह अपने दामाद को देख कर खुशी से फूले नहीं समाये। उन्होंने क़ाज़ियों को बुलाया और अपनी बेटी का निकाह अजब मलिक से करवा दिया। हर तरफ खुशिया मनाई गईं। परियाँ गाना गा रही थीं।

*मॊति निख् तूर्य किन् च्रुय यिख यॊतुये, दिल गोम मॊतुये मेलख ना*
*कन् बोज़ वनुवुन क्याह छुय रुतये, दिल गोम मॊतुये मेलख ना*

इस तरह बारह साल की जुदायी व तकलीफों के बाद अजब मलिक व नोश लब का मिलन हो गया। उन की वीरान ज़िंदगी में बहार आ गई।

*ब यकजा मील्य् बॊंबुर तय यॅंबरज़ल, ब फुरसथ बीठ्य छॉविख ही तु मसवल*
*द्वयव तशन् लबव चव वसलुकुय आब, फिराकुक राह च्रॊलुख गॅय सब्ज़ो सैराब*

**मासूम शाह और नाज़ मस्त की मुलाक़ात :**

शादी के बाद नाज़ मस्त के पिता सिपाह सालार ने नोश लब के पिता मशहूर शाह को दावत दी जिस में क़िस्म क़िस्म की ज़ियाफतों व शरबतों का इन्तिज़ाम कर दिया गया था। खाना खाने के बाद मासूम शाह बाग की तरफ सैर के लिये निकल पडे। वहाँ उन्हें किसी औरत के गाने की आवाज़ सुनायी दी। मासूम शाह आगे बढ़े। उन्होंने देखा, नाज़ मस्त अपनी कनीज़ों के बीच में बैठ कर गाना गा रही थी। मासूम शाह उस के पास पहुँचे और दोनों ने एक दुसरे को क़रीब से देखा।

*यॅमिस तस कुन नज़र पॅयि तस यॅमिस कुन, सॉनुख द्वशवॅन्य् दिलन तॉसीर अॅश्कुन*
*यॅमिस गुल रोयि दिल गव पार पार, तॅमिस मानंदे बुलबुल खार खार*

क़रीब से एक दूसरे को देख कर मासूम शाह और नाज़ मस्त एक दूसरे के दीवाने हो गये। दोनों गश खाकर ज़मीन पर गिर पडे। कनीज़ों ने शोर मचाया। दावत में आये हुये लोग दौड कर आ गये। कोई नाज़ मस्त को उठाने लगा तो कोई मासूम शाह को। अजब मलिक भी आ पहुँचा। उस ने मासूम शाह को अपनी गोद में लिया और उसे शरबत पिलाने लगा। इस के बाद उस ने मासूम शाह से उस के दिल की बात मालूम की।

अजब मलिक सिपाह सालार के पास पहुँचा और उसे मासूम शाह के दिल की बात बता दी। उस ने सिपाह सालार से प्रार्थना की कि मासूम शाह का निकाह नाज़ मस्त से कर दिया जाये। साथ ही उस ने नाज़ मस्त की छोटी बहन मस्त नाज़ की बात भी की कि उस का निकाह उसके दोस्त रासिख से कर दिया जाये। सिपाह सालार दोनों बातों के लिये राज़ी हो गये।

**मासूम शाह का निकाह और सब की घर वापसी:**

मासूम शाह का निकाह नाज़ मस्त से और रासिख का निकाह मस्त नाज़ से कर दिया गया। कोई दो हफ्ते सिपाह सालार के हाँ रह कर अजब मलिक, मासूम शाह और रासिख को अपने अपने घर की याद सताने लगी।

*त्रॅ बुलबुल गॅय त्रॅ गुल ह्यथ हुस्नु वारे, त्रॅयव तोतव नियख ज़ीनिथ त्रॅ हारे*

अजब मलिक, मासूम शाह व रासिख सिपाह सालार के पास पहुँचे और उन से अपने अपने घर जाने की इजाज़त मांगी। उन्होंने कहा, ‘‘हम बहुत समय से घर से बाहर हैं। हमें हमारे माता पिता की याद सता रही है। हम जल्द से जल्द अपने अपने घर लौटना चाहते हैं ताकि अपने माता पिता का हक़ अदा कर सकें।

*इजाज़थ गोछ करुन असि मेहरबॉनी, सु हक नखु वालुहव दर ज़िंदगॉनी*

बादशाह सिपाह सालार ने उन्हें खुशी खुशी जाने की इजाज़त दी।

*तिमव फरमोव्हख छिव पानु म्वखतार, करुन असि शूबि नु अथ जायि इनकार*

सिपाह सालार ने कहा, ''हम ने हमारी बेटियों को नाज़ों से पाला है। देख लेना, किसी भी बात पर उन का दिल न टूटे।'' अजब मलिक, मासूम शाह व रासिख ने वादा किया कि वह कभी भी अपनी बीवियों को तकलीफ नहीं देंगे। इस के बाद अजब मलिक ने अपने और मासूम शाह व रासिख के घर वालों को वापस आने की खबर पहुँचायी।

अजब मलिक व उस के साथियों को सफर के लिये घोडे, शाही डोलियाँ, क़ीमती सामान व खज़ाने देकर विदा कर दिया गया। अजब मलिक व रासिख नोश लब व मस्त नाज़ के साथ तुरकिस्तान की तरफ और मासूम शाह नाज़ मस्त के साथ नख्शब शहर की तरफ रवाना हो गये। अपने अपने देश पहुँच कर लोगों ने उन की ज़ोर शोर से आवभगत की और उन के वापस आने की खुशी में शादियाने मनाये गये।

———————————————————————————————

***स्रोत: मोहम्मद यूसुफ टेंग द्वारा संकलित 'गुलरेज़' व अब्दुल अहद आज़ाद द्वारा लिखित 'कश्मीरी ज़बान और शायरी, खण्ड-३'। प्रकाशक: जम्मू व कश्मीर अकेडमी आफ आर्ट, कल्चर ऐण्ड लेंग्वेज्स, श्रीनगर।***

———————————————————————————————